ज्ञानी चूहा

मन्मथनाथ गुप्त

518

ज्ञानी चूहा

मन्मथनाथ गुप्त

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मन्त्रालय
भारत सरकार

प्रथम संस्करण : फाल्गुन 1902 (फरवरी 1981)
द्वितीय संस्करण : अग्रहायण 1916 (दिसम्बर 1994)

© प्रकाशन विभाग

ISBN 81-230-0245-9

मूल्य : 20.00 रुपये

निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय,
भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001 द्वारा प्रकाशित।

विक्रय केन्द्र • प्रकाशन विभाग

- सुपर बाजार (दूसरी मंजिल) कनाट सर्कस नई दिल्ली-110001
- कामर्स हाउस करीमभाई रोड बालार्ड पायर बम्बई-400038
- 8 एस्प्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-700001
- एल.एल.ए. आडीटोरियम 736 अन्नासलै मद्रास-600002
- बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग अशोक राजपथ पटना-800004
- निकट गवर्नमेंट प्रेस रोड, त्रिवेन्द्रम-695001
- 10-बी. स्टेशन रोड लखनऊ-226019

दि सेन्ट्रल इलैक्ट्रिक प्रेस, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

विषय सूची

1.	ज्ञानी चूहा	1
2.	कर्ज	5
3.	बड़ा कौन	8
4.	खुली खिड़की	13
5.	ठगनगरी की कायापलट	18
6.	खोटे रुपये	22
7.	लाल छाता	26
8.	होनी	31
9.	परोपकारी बन्दर	36

ज्ञानी चूहा

एक घर में चूहों का एक बिल था। इस बिल में एक चूहा अपनी चुहिया रानी और चार बच्चों के साथ रहता था।

एक दिन चुहिया ने चूहे से कहा—देखना, मैं कह देती हूं, ये बच्चे किसी दिन मुसीबत में फंस जाएंगे।

जब से ये चार बच्चे पैदा हुए थे, तब से यह शिकायत चूहा सैंकड़ों बार सुन चुका था। उस समय वह छोटे-छोटे कंकड़ों को लेकर उनसे खेल रहा था। इसलिए उसने बात अनसुनी करते हुए कहा — अच्छा, ऐसी बात है?

यह कह कर वह फिर अपने खेल में व्यस्त हो गया। चुहिया को लगा की चूहा कुछ सुन नहीं रहा है। वह तमक कर वहां से चल दी और बच्चों के कमरे में पहुंची, जहां चिड़ियों के परों, रूई और नरम टहनियों का खूब गुदगुदा बिस्तर बिछा हुआ था। वह बच्चों से बोली—तुम लोग बिल्कुल घर से बाहर न निकलो। एक बहुत बड़ा बिल्ला आया हुआ है। वह तुम लोगों की तलाश में है।

इस पर बच्चे हंस पड़े। मां ने जब उनको खिलखिलाते देखा तो वह एकदम से नाराज हो गई और सबको चांटे मारकर वहां से निकल गई। बच्चे फिर हंसने लगे और आपस में एक दूसरे को डराने लगे ... बि ... ल ... ल्ला आया है ... भा ... गो ...।

बच्चों को बाहर निकलने नहीं दिया गया, पर बच्चों का पेट भरना आसान नहीं था। वे भूखे रहने लगे। एक दिन भूखी हालत में वे चारों अपने बिल के ऊपर ढका हुआ कंकड़ हटाकर बाहर निकल गए और इधर-उधर जो कुछ मिला, खा-पी आए। खाने को कम मिला, फुदकने को बहुत जगह मिली। चारों को आश्चर्य हुआ की दुनिया इतनी बड़ी है और उसमें इतनी तरह की चीजें हैं। कोई गोल है तो कोई लम्बी। पहले-पहल उन चारों ने एक आदमी देखा तो वे समझे कि यही बिल्ला है। वे बहुत घबराए और बिल की तरफ भागे। लेकिन कौतुहल शान्त नहीं हुआ था, इसलिए फिर निकले तो इस बार कई आदमी दिखाई पड़े। वे दुबक कर उन लोगों का रंग-ढंग देखने लगे। मालूम हुआ कि ये प्राणी चूहे खाने में कोई दिलचस्पी नहीं रखते। तब उनका साहस और बढ़ गया।

एक दिन इसी प्रकार चारों बच्चे बिल के बाहर खेल-कूद रहे थे। अचानक उन्हें घर का कुत्ता टामी दिखाई पड़ा। आंखें चार हुईं और वह बिल के पास पहुंचा, पर तब तक चूहे नौ-दो ग्यारह हो चुके थे। दो-चार बार में चूहे समझ गए कि टामी बेकार है। वह तो केवल भौं-भौं करना जानता है। उसके बस का कुछ नहीं।

अब वे चारों चूहे बिल्कुल आजाद हो चुके थे। न बाप उनसे कुछ कहता था, न मां। इन चारों ने अपना घर भी अलग कर लिया था। चूहे रोज कभी अकेले और कभी मिल कर दुनिया घूमने निकलते। उन लोगों ने किताबों की अलमारी देखी तो समझ में नहीं आया कि क्या चीज है। किताबें कुतर के चखीं तो कोई रस नहीं आया। पर वे समझ गए कि इनका कोई-न-कोई उपयोग जरूर होगा। चुपके से देखते रहे कि आदमी इनका क्या करते हैं, तो पता लगा कि पुस्तक सामने रख कर आदमी उसे देखते रहते हैं। घंटों देखते रहते हैं।

चारों बच्चे केक का टुकड़ा लेकर अपने बूढ़े बाप के पास पहुंचे और बोले—पिताजी, अलमारी में क्या चीजें सजी हैं?

पहले तो चूहा समझा नहीं, पर जब समझ गया तो डर कर बोला—अरे, उन्हें कभी भूल कर भी न छूना। वे किताबें हैं। उनमें आदमी अपना ज्ञान लिख जाता है। उसी को बाद में दूसरे पढ़कर जान जाते हैं।

बच्चों की समझ में नहीं आया, बोले—हम चूहे भी ऐसा क्यों नहीं करते?

इस पर बड़ा चूहा हंसा। बोला—आदमी का ज्ञान उसी को मुबारक हो, हमें नहीं चाहिए। हमें जो थोड़ा-बहुत ज्ञान चाहिए, हम उसे बोल-बतला कर दे देते हैं। उसी से अगली पीढ़ी को सब कुछ मालूम हो जाता है।

इस बीच और भी नौजवान चूहे वहां आ गए, क्योंकि उनको खबर लग गई थी कि कोई बहुत बड़ी बात हो रही है और चूहे जी अपना ज्ञान बच्चों को दे रहे हैं। ढपोर नाम का एक मोटा-सा चूहा सन्देह करता हुआ बोला—अगर हम लोग भी पुस्तकें लिखें और पुस्तकालय तैयार करें, तो हमारे लिए बहुत लाभ की बात हो सकती है।

इस पर बड़ा चूहा बहुत नाराज हुआ। बोला—आदमी ने जाने क्या-क्या किया। मैं तो बहुत दुनिया देख चुका हूं। कई महीने एक जहाज पर घूम चुका हूं। तरह-तरह के लोग और तरह-तरह के देश देख चुका हूं, पर आदमी को मैंने किसी भी तरह चूहा जाति से अच्छा नहीं पाया। हां, वे आकार में बड़े हैं, सो हाथी भी बड़ा है, पर इससे ज्यादा कुछ नहीं।

यह कह कर चूहे ने चार कंकड़ों का अपना वही खेल शुरू कर दिया, जैसे सब चूहे वहां से चले गए हों। पर वह सोच रहा था। चूहे चुपचाप उसे देखते रहे, क्योंकि वे जानते थे कि वह फिर बोलेगा। हुआ भी ऐसा ही। वह एकाएक खेल रोक कर बोला—मैं तुम लोगों को बताना नहीं चाहता था, पर जापान के कई विद्वान चूहे मुझे मिले, जिनसे मुझे पता लगा कि परमाणु-बम नाम से एक बम बना है, जिससे पूरा शहर उड़ सकता है।

ढपोर सब चूहों का अगुआ बन गया, बोला—एक शहर उड़ जाएगा तो क्या होगा?

बूढ़े चूहे ने इस बीच खेल फिर शुरू कर दिया था, पर इस बार वह कंकड़ों को हाथ से न मार कर पूंछ से मार रहा था। बोला—परमाणु बम से बढ़ कर हाइड्रोजन बम भी निकला है। इसका पता मुझे हवाई जहाज से आए हुए एक चूहे से मिला। मुझे विश्वास है कि मनुष्य इसी हाइड्रोजन बम से मरेगा। वह अपने खंजर से आप ही खुदकशी करेगा। एक हाइड्रोजन बम सैकड़ों परमाणु बमों के बराबर है।

ढपोर अब कुछ चिंतित हुआ। बोला—तो आदमियों के साथ-साथ हम लोग भी उड़ जाएंगे?

—यही तो मुसीबत है। आदमी खुद इन किताबों को पढ़-पढ़ कर अपना नाश कर रहा है। वह सारी सृष्टि का नाश करेगा। वह सब प्राणियों का शत्रु है।

ढपोर ने कहा—तो सारी बिल्लियां भी मर जाएंगी?

बूढ़े चूहे को इस पर बड़ा क्रोध आया। उसने पूंछ से एक कंकड़ को ढपोर की तरफ दे मारा और कहा—तू बड़ा बेवकूफ है, यदि बिल्लियां मर जातीं और हम बचे रहते तो बात थी; पर हम भी तो मर जाएंगे।

अब ढपोर परिस्थिति समझ गया। बोला—आपने और बिरादरी के दूसरे ज्ञानियों ने इस पर कुछ सोचा है?

—हां, सोचा है। हम लोगों ने यह समझ लिया कि मनुष्य जाति बिल्कुल घिनौनी और गन्दी है। इससे हमें कुछ लेना-देना नहीं है। इसलिए हम सबने मिलकर नीचे की तरफ गड्ढा बनाना शुरू किया है, ताकि जब आदमी हाइड्रोजन बम गिराकर एक-दूसरे को खत्म कर दे तो हम लोग मील-दो मील जमीन के नीचे जाकर हाइड्रोजन बम के असर से बच सकें। तुम सब लोग भी गड्ढा खोदने में शरीक हो जाओ और श्रमदान करो।

सब चूहे इस पर राजी हो गए। पर ढपोर ने कहा—बचने को तो हम बच जाएंगे, पर खाएंगे क्या? ईश्वर ने सारे प्राणियों के लाभ के लिए सेवक बनाकर मनुष्य को पैदा किया ताकि वह हल जोते, खेती करे, खाने-पीने की चीजें उगाए और हम लोग उससे छीन-झपट कर अपना पेट भरें। इसलिए हम लोगों की भलाई इसी में है कि मनुष्य भी जिन्दा रहे। क्या इसका कोई उपाय नहीं है?

बूढ़ा चूहा बोला—उपाय क्यों नहीं है। इन्हीं किताबों में इसका भी उपाय लिखा हुआ है। पर मनुष्य उनको पढ़ेगा नहीं और जो पढ़ते हैं, उनकी चलती नहीं है।

उस दिन से चूहे जमीन में गड्ढा खोद रहे हैं कि हाइड्रोजन बम गिरे तो बचें और ढपोर के नेतृत्व में चूहे पुस्तकें काट रहे हैं, क्योंकि वे समझ चुके हैं कि यही सारी आफत की जड़ है।

कर्ज

बारह बर्ष का रामू यह सोचकर कलकत्ता पहुंचा था कि वहां बहुत पैसे मिलते हैं। वह अपने गरीब मां-बाप से बिना कहे गांव से निकल कर लुढ़कते-पुढ़कते कलकत्ता पहुंच गया।

शहर क्या था, जन-समुद्र था। रामू को बहुत भय लगा। वह स्टेशन से धीरे-धीरे टहलता हुआ चलने लगा। रास्ते में एक जगह उसने देखा कि कुछ लोग खड़े हैं और बड़ी-बड़ी कड़ाहियां मांजी जा रही हैं। वह उन कड़ाहियों को देखने के लिए खड़ा हो गया। इससे पहले उसने इतनी बड़ी कड़ाहियां और परातें नहीं देखी थीं। चूने और राख की दुर्गन्ध को चीर कर बड़ी मीठी सुगन्ध भी आ रही थी।

सफर के कारण उसका चेहरा उतर गया था। मुंह कुम्हलाया हुआ था। दो दिनों से कहीं चने खा लिए, तो कहीं अमरूद खा लिया—इसी तरह चल रहा था। वह अब भी खड़ा-खड़ा देख रहा था कि किसी ने उसकी पीठ पर एक धौल जमाई—देखता क्या है बे, नौकरी करेगा?

अन्धा क्या मांगे दो आंखें। वह बोला—हां।

उस हंसमुख तोंदियल आदमी ने उसे और एक धौल जमाई और किसी को आवाज देते हुए कहा—अरे कल्लू, इससे कड़ाही मंजवा। नाम लिख लेना।

चार आने रोज और खुराक पर नौकरी लग गई।

अब उसके दिन अच्छे कटने लगे। पर जिसके एवज में उसे नौकरी मिली थी, वह तीन महीने बाद अपने गांव से घूम कर आया तो साथ में अपने भतीजे को भी लेता आया था। नतीजा यह हुआ कि रामू की नौकरी गई।

रामू ने एक बार फिर अपने को सड़क पर पाया। उसके पास पूंजी भी कुछ नहीं थी, क्योंकि पिछले ही दिन उसने अपने पिता को मनीआर्डर भेजा था।

पर रामू के मन में अब अकेलेपन का उतना डर नहीं था। अब उसे कलकत्ता उतना भयानक नहीं लगता था। यह तो मालूम होता था कि यह महासमुद्र है, पर अब वह इसमें तैरने की हिम्मत रखता था।

पर जब दो-तीन घण्टे सड़कों पर फिरा और इस बार उसे किसी ने नहीं पूछा तो वह कुछ-कुछ निराश हो चला। उसकी जेब में केवल एक चवन्नी थी। उसने चार पैसे के चने लिए और जेब से निकाल कर चवन्नी देने लगा। अभी वह बहंगी वाले को पैसे दे ही रहा था कि किसी ने पीछे से उसके हाथ में एक दस रुपए का नोट थमाते हुए कहा—देखता नहीं, तेरी जेब से गिरा है। नया आया मालूम होता है।

जब तक रामू ने दस रुपए का नोट हाथ में लिया, तब तक देने वाला भीड़ में गायब हो चुका था। रामू हक्का-बक्का रह गया। बहंगी वाले ने बाकी पैसे लौटाते हुए उपदेश दिया — परदेश में ऐसे रहा जाता है? यह कहो कि बड़ा शरीफ आदमी था, नहीं तो नोट मिलने पर कौन लौटाता है? दस रुपए बहुत होते हैं। दस रुपए का तो मेरा सारा खोमचा है।

रामू नोट का क्या करे, यह समझ नहीं पा रहा था क्योंकि नोट उसका नहीं था। कल अलबत्ता ऐसा एक नोट उसके पास था, पर उसने उसे मनीआर्डर कर दिया था। हां, उसे अच्छी तरह याद है, उसने मनीआर्डर किया था। जेब में अब भी रसीद होगी। उसने निकाल कर देखा तो रसीद थी।

वह नोट लेकर सोचने लगा, भगवान ने दिया या किसी भले आदमी ने, मेरा दुख देखकर दिया। पर उसने यह क्यों कहा कि तुम्हारी जेब से गिरा है। नहीं, यह नोट लेना ठीक नहीं। जब यह मेरा नहीं है तो मैं क्यों लूं? इस तरह लेना तो सरासर बेईमानी है। वह आदमी तो अब नहीं मिल सकता, पर शायद जिसका नोट गिरा हो, वह ढूंढता हुआ आए। रामू वहीं एक जगह बैठ गया और भीड़ देखने लगा। उसने पक्का इरादा कर लिया कि नोट का मालिक नोट ढूंढ़ता हुआ आएगा तो उसे नोट वापस कर दूंगा।

पर कोई नहीं आया। वह बैठे-बैठे बहंगी वाले का लेन-देन देखने लगा। धीरे-धीरे उसके मन में एक विचार उठा कि यदि नोटवाला न आए तो क्यों न मैं भी बहंगीवाला बन जाऊं?

तीन घण्टे बाद रामू वहां से उठा। उसने यह तय कर लिया था कि मैं इस नोट को अपनी पूंजी बनाकर छोटी-सी बहंगी लगाना शुरू करूंगा। उसका मन शान्त नहीं था, इसलिए उसने तय किया कि मुनाफे से दस रुपया दान दे देगा। पर यह फैसला करने पर भी मन दुखी ही रहा। वह अपने को उलाहना दे रहा था कि मैंने उस आदमी से यह क्यों नहीं कहा कि नहीं भाई, यह नोट मेरा नहीं है। ऐसा कहने पर भी यदि वह नोट देता तो मुझ पर दोष नहीं होता।

रामू ने बहंगी लगाना शुरू किया और पहले वाली दुकान से मिठाइयां लाकर फेरी करने लगा। वह हंसमुख तोंदियल आदमी ही, जिसने उसे धौल जमाई थी और नौकरी दी थी, उस दुकान का मालिक था। वह उस पर बहुत खुश था और उसकी मदद करना चाहता था। इसलिए उसे उधार पर सौदा मिलने लगा। वह रामू को दूसरे खोमचे वालों से भी सस्ते में माल देता था। इसके अलावा दुकान के नौकर-चाकर भी उसे हर चीज तोल में कुछ ज्यादा ही देते थे।

रामू अपने मां-बाप को कुछ न कुछ पैसे भेजता रहा। थोड़े दिनों में उसने एक छोटी-सी दुकान भी कर ली। फिर साल-दो-साल में उसने बड़ी दुकान की और पांच-छह साल में उसकी दुकान कलकत्ता भर में मशहूर हो गई। जिस दुकान में उसने कढ़ाही मांजी थी, वहां के उस हंसमुख मालिक के मर जाने के बाद दो कारीगर लड़ कर निकल आए थे और वह रामू के साथ हो गए थे। उसकी दुकान खूब चली।

बीस साल और बीत गए। अब तो हजारों का लेन-देन होता था। रामू फिर भी उस दस रुपए के नोट का कर्ज अभी तक नहीं भूल पाया था। वह दिल खोल कर हर अच्छे काम में चन्दा देता रहा। अब वह रामू नहीं, सेठ रामलाल कहलाता। हजारों का दान कर चुकने पर भी वह यह नहीं समझता था कि उसका कर्ज चुकता हो गया। सब उसे बहुत ईमानदार बताते, पर उसके मन में वही गांठ बनी रही।

उसकी आमदनी जितनी ही बढ़ती गई, सन्देह उतना ही बढ़ता गया। इसलिए उसने दान की रकम भी बढ़ा दी। उसके लड़के उसके दान से नाराज रहते, पर वह किसी की नहीं सुनता। वह कहता—मैं तो कर्ज चुकाता हूं।

क्या कर्ज है, किसका कर्ज है, किसी को पता नहीं।

बड़ा कौन?

जंगल के राजा सिंह ने इधर-उधर देखा, फिर वह नदी में पानी पीने के लिए नीचे उतर पड़ा। अभी वह मुंह लगाकर पानी पीना ही चाहता था कि सामने से नदी का राजा घड़ियाल आकर खड़ा हो गया और उसे पानी पीने से रोकते हुए बोला—बस-बस, अब पानी मत पियो। तुम जंगल के राजा कहलाते हो और मैं नदी का राजा। यह फैसला हो जाए कि हम दोनों में से कौन सारी सृष्टि का राजा है, फिर पानी पीना।

सिंह हंसा और बोला—घड़ियाल! तुझे यह हो क्या गया है, जब जंगल का राजा मैं हूं, तो सृष्टि का राजा भी मैं ही हूं। तू तो मछली, कछुओं आदि का राजा है। मेरे सामने तेरी क्या बिसात? मेरे अधीन बाघ, भालू आदि कितने ही ऐसे जानवर हैं, जिनके सामने तू कुछ भी नहीं है। मेरी तेरी भला क्या होड़?

घड़ियाल बोला—मैंने तुझसे 'तुम' करके बात की, इसलिए तू सिर पर चढ़ गया। अब आ तेरी-मेरी पकड़ हो जाए। जो जीतेगा, वह सृष्टि का राजा कहलाएगा।

सिंह इस बात पर राजी हो गया, बोला—तो आ जा, फिर देखता क्या है? अभी एक मिनट में तेरी गर्दन मरोड़ देता हूं।

घड़ियाल बोला—मैं जमीन पर क्यों आऊं, तू पानी में आ, फिर देखूं तुझमें कितनी ताकत है। पहली ही बार में तुझे एक मन पानी पिला दूंगा।

दोनों इस बात पर देर तक बहस करते रहे कि लड़ाई कहां हो। सिंह कहता रहा कि जमीन पर हो और घड़ियाल कहता रहा कि पानी में। जब दोनों इस बात पर एक राय नहीं हो सके और बहस करते-करते सूरज चढ़ गया तब घड़ियाल ने कहा—अच्छी बात है, पकड़ की कोई जरूरत नहीं, क्योंकि पकड़ होगी तो वह या तो जमीन पर होगी या पानी में। तू पानी में कमजोर पड़ता है और मैं जमीन पर। आओ हम लोग दौड़ लगाएं। जो दौड़ में आगे निकल जाएगा, वह सृष्टि का राजा माना जाए और जो दौड़ में पीछे रह जाए, वह उसके अधीन हो जाए।

सिंह इस बात पर राजी हो गया। उसने कहा—आ जा, फिर दौड़ लगाएं।

घड़ियाल बोला—नहीं, तू नदी के किनारे-किनारे दौड़, मैं नदी में दौड़ूंगा। इस तरह जो आगे निकल जाएगा, वह सृष्टि का राजा कहलाएगा।

घड़ियाल की यह बात सिंह को भी जंच गई और दोनों दौड़ लगाने के लिए तैयार हो गए। सिंह जमीन पर जम कर खड़ा हो गया और घड़ियाल पानी में। सिंह के एक-दो-तीन कहते ही दोनों दौड़ पड़े। सिंह दौड़ता जाता था और बीच-बीच में गर्जन भी करता जाता था। इसी तरह घड़ियाल पानी को ऐसे चीर कर दौड़ रहा था, जैसे कोई टारपीडो जा रहा हो। वे घंटों दौड़ते रहे, पर उनमें कोई भी आगे नहीं निकल सका। दोनों अपनी-अपनी जगह दौड़ में बिल्कुल बराबर रहे।

जब दिन छिपने को हुआ, तो दोनों ने एक-दूसरे को इशारा किया और दोनों रुक गए। सिंह ने कहा—अब जाने दो, इस झगड़े में क्या रखा है, तू मछलियों और कछुओं पर अपना राज कर और मैं जंगल में अपना राज करूं।

पर घड़ियाल नहीं माना। उसने कहा—नहीं, हम इस मामले को इस तरह मझधार में नहीं छोड़ सकते। अगर तू थक गया है, तो मुझे सृष्टि का राजा मान ले और घर चला जा।

पर सिंह ने इस बात को मानने से इन्कार किया। दोनों चिल्ला-चिल्ला कर फिर बहस करने लगे। इतने में वहां से एक बूढ़ा भालू गुजरा। सिंह ने उसे बुलाया और सारी बात कह सुनाई। फिर बोला—अब भालू महाराज, तुम इसका फैसला करो। तुम हम दोनों से उम्र में बड़े हो, इसलिए जो बात तुम कहोगे, उसे हम मान लेंगे।

भालू ने कहा—महाराज आप दोनों राजा हैं, मेरे जैसे मामूली जीव को इस झगड़े में क्यों डालते हैं।

पर दोनों ने उसे मजबूर किया। सिंह बोला—तुम ज्ञानी हो, इसलिए तुम असली बात बता दो। मुझे आशा है कि तुम सच्ची बात कहोगे।

भालू बोला—महाराज, पहले सब ऐसा ही कहते हैं, पर दरअसल सच्ची बात किसी को रुचती नहीं है। यदि सच बात अपने पक्ष में जाती हो, तब तो लोग उसकी तारीफ करते हैं, पर खिलाफ पड़ती हो तो लोग तरह-तरह का इलजाम लगाते हैं। इसलिए आप मुझको मजबूर न कीजिए। मेरी सारी उम्र शांति में कट गई है। अब मैं बुढ़ापे पर दाग लगवाना नहीं चाहता।

पर घड़ियाल और सिंह दोनों नहीं माने। तब भालू ने कहा—अच्छा मैं नदी के उस पार जाता हूं, वहां से मैं अपनी राय बताऊंगा क्योंकि आप लोग इतने बड़े हैं कि आपके सामने मेरे मुंह से आवाज नहीं निकलती।

दोनों इस बात पर राजी हो गए। तब भालू दोनों को प्रणाम करके नदी के उस पार चला गया। पर नदी के उस पार जा कर भी वह रुका नहीं और चलता ही गया। जब इस पार बैठे हुए घड़ियाल और सिंह ने यह तमाशा देखा तो उन्होंने उसे पुकारा। पर उसने अपनी चाल और तेज कर दी तथा गर्दन मोड़ कर कहा—महाराज, आप लोग मुझे माफ कर दें। हर समय सत्य बोलना अच्छा नहीं होता। यदि आप को सत्य जानना ही है, तो आप महालंगूर के पास जाएं। वह ज्ञानी भी है, साथ-साथ उसे वह विद्या भी आती है, जिसके कारण सच्ची बात कहते हुए भी वह सजा से बच सकता है।

सिंह और घड़ियाल इस बात पर बहुत दुखी हुए, पर अब रात हो चुकी थी। दोनों अपना-अपना खाना खा कर वहीं लेटे रहे।

अगले दिन सुबह होते ही वे दोनों लंगूरों के मुहल्ले में पहुंचे। पर जब लंगूरों ने पूरा किस्सा सुना तो वे अपनी बस्ती छोड़ कर भाग गए।

जब सिंह और घड़ियाल ने यह माजरा देखा, तो वे बहुत दुखी हुए और उन्होंने कहा—यह बहुत बुरी बात है। लोग झूठ कहने से घबराएं तो ठीक मालूम होता है, पर लोग सच कहने से क्यों घबराते हैं?

दोनों दुखी होकर वहां से चले। कुछ दूर जाने पर उन्होंने देखा कि एक पेड़ पर एक बहुत बड़ा लंगूर बैठा है। सिंह ने उसे ललकारते हुए कहा—अरे तू कौन है?

उस लंगूर ने कहा—मैं महालंगूर हूं और लंगूरों की बातों से दुखी होकर यहां आ कर रहता हूं।

सिंह बोला—तू मेरे राज में रहता है, फिर भला तुझे क्या दुख हो सकता है? क्या तुझे किसी ने सताया है?

महालंगूर बोला—मुझे किसी ने सताया नहीं है और सताया भी है तो ऐसे लोगों ने सताया है, जिनके खिलाफ मैं कोई शिकायत नहीं कर सकता। मैं सच बोलने का आदी हूं, इसलिए लंगूर मुझे पसन्द नहीं करते। इसीलिए मैं अकेले रहता हूं।

घड़ियाल बोला—बस, बस, हमें ऐसे ही प्राणी की जरूरत थी। फिर उन लोगों ने अपनी सारी कथा कह सुनाई।

सारी बात सुनकर महालंगूर बोला—महाराज, सत्य बोलना तो बहुत कठिन है पर सत्य का सुनना उससे भी कठिन है। क्या आप सत्य सुनने के लिए तैयार हैं।

दोनों एक साथ बोले—हां, हम तैयार हैं।

पर महालंगूर ने अपने पेड़ पर बैठे-बैठे कहा—मालूम तो नहीं होता कि आप सत्य सुनने को तैयार हैं। आप दोनों फौलादी जिरह-बख्तर सीने पर बांध लीजिए, तब शायद आप सत्य सुन सकेंगे।

इस पर सिंह बहुत जोर से दहाड़ता हुआ बोला—मेरा सीना फौलाद से भी सख्त है।

घड़ियाल बोला—मेरा सीना फौलाद से दुगुना सख्त है।

सिंह बोला—मेरा चौगुना सख्त है।

इस तरह दोनों बढ़-बढ़ कर बातें करने लगे। तब महालंगूर ने बीच-बचाव करते हुए कहा—यह सब कहने की बातें हैं। इससे मालूम होता है कि आप लोग सत्य सुनने को तैयार नहीं हैं।

पर दोनों ने कहा—नहीं, नहीं, हम सत्य सुनना चाहते हैं।

तब महालंगूर बोला—अच्छी बात है, जब आप सत्य सुनना ही चाहते हैं तो इस जंगल के सबसे ऊंचे पेड़ों वाले हिस्से में चलिए। वहां मैं आप दोनों को अलग-अलग पेड़ के तने से रस्सी से बांधूंगा, फिर सत्य सुनाऊंगा। आप देखेंगे कि सत्य में इतनी ताकत होती है कि दोनों की रस्सियां खुल जाएंगी।

सिंह और घड़ियाल दोनों को ही यह शर्त बुरी लगी, पर वे सत्य सुनने की ठान चुके थे, इसलिए उन्होंने शर्त मंजूर कर ली। तब महालंगूर ने उन्हें ले जा कर घास की बहुत मोटी सात-सात रस्सियों से अलग-अलग पेड़ के तने से बांध दिया। फिर पेड़ की सबसे ऊंची टहनी पर बैठते हुए उसने कहा—अब तुम लोग तैयार हो जाओ। मैं 'तुम' कह रहा हूं, इससे बुरा न मानो क्योंकि इस समय मैं न्यायाधीश की जगह पर हूं।

महालंगूर ने सांस लेकर एक-एक शब्द को चबाते हुए कहा—तुम दोनों में से कोई भी सृष्टि का राजा नहीं है। सृष्टि का राजा तो आदमी है। तुम लोग इस बात पर फूले नहीं समाते कि तुम बड़े ताकतवर हो, पर मनुष्य की एक गोली के सामने तुम कुछ भी नहीं हो। अभी तुम दौड़ लगा रहे थे, तो आंधी-सी आ रही थी। पर तुम चाहे कितनी भी दौड़ क्यों न लगाओ, मनुष्य मशीनों के सहारे जितनी दौड़ लगा सकता है, तुम लोग उतनी दौड़ हरगिज नहीं लगा सकते। मालूम है, मनुष्य हवाई जहाज से एक घंटे में कई सौ मील की रफ्तार से उड़ सकता है।

सिंह इस बात पर बहुत नाराज हुआ और उसने 2-3 रस्सियों तोड़ डालीं। घड़ियाल ने भी ऐसा ही किया। पर वे तो सात रस्सियों से बंधे थे। तब महालंगूर ने पूंछ से कई तरह के चिह्न बना कर उनसे कहा—आदमी की असली बड़ाई इस बात में नहीं है कि वह ज्यादा मार सकता है। तुम लोग

तो यह समझते हो कि जो जितना मार सकता है, वह उतना बड़ा है। पर नहीं, आदमी की बड़ाई इस बात में है कि वह पैदा भी कर सकता है। तुम लोग क्या पैदा कर सकते हो?

सिंह बोला—मैंने एक दिन में 20 हिरन मारे थे।

घड़ियाल बोला—मैंने एक झपट्टे में एक हजार मछलियों और कछुओं को मारा था।

महालंगूर बोला—बस तुम्हें यही करना आता है, पर मैं तो पूछता हूं कि तुम पैदा क्या कर सकते हो। मनुष्य केवल नाश ही नहीं कर सकता, बल्कि वह चीजें भी पैदा कर सकता है। वह खेती करके अनाज पैदा करता है, वह अपने कारखानों में जाने कितनी ही तरह का माल पैदा करता है। वह जो चीज चाहे पैदा कर सकता है। उसकी असली बड़ाई इसी बात में है। उसने अभी हाइड्रोजन बम बनाया है, पर वह तो कुछ भी नहीं। खेती-बाड़ी, छापाखाना, पुस्तकालय और इस तरह के कामों से ही उसने अपनी बड़ाई साबित की है। उसकी यह मेहरबानी है कि उसने सिंह और घड़ियाल को अभी तक जिन्दा छोड़ा है।

यह कहना था कि घड़ियाल और सिंह दोनों बड़े जोर से तड़पे और रस्सी तोड़ कर महालंगूर की ओर झपटे। पर महालंगूर पहले से सारी परिस्थिति भांप चुका था। जब तक ये रस्सी तोड़ें, वह तब तक पेड़ों पर छलांग लगाता हुआ मील भर दूर जा चुका था। जब दोनों ने यह देखा कि महालंगूर भाग गया, तब वे गुस्से के मारे एक-दूसरे पर टूट पड़े और लड़-भिड़ कर दोनों वहीं ढेर हो गए। महालंगूर यह खबर पाकर लौट आया और उसने तमाशा देखने के लिए आए प्राणियों से कहा—अफसोस है कि ये बेचारे सत्य को सह नहीं सके।

थोड़ी देर में एक शिकारी आया। सिंह और घड़ियाल का चमड़ा मुफ्त में पाकर बहुत खुश हुआ। महालंगूर बैठे-बैठे सब कुछ देख रहा था। बोला—सृष्टि का राजा तो अब आया।

खुली खिड़की

राम छुट्टियों में अपने चाचा के यहां घूमने गया तो उसने देखा कि वहां कई तरह के छोटे-मोटे जानवर पले हैं। एक तो बड़ा-सा कुत्ता था, जिसका नाम टाम था। यों तो वह देखने में बहुत डरावना मालूम होता था, पर स्वभाव से बहुत ही अच्छा था। एक बिल्ली थी, जिसका नाम मोती था। वह हर समय रसोईघर के इर्द-गिर्द चक्कर काटा करती थी, जैसे रसोई की सारी जिम्मेदारी उसी पर हो।

इसके आलावा लकड़ी के एक जंगलेदार बक्स में कुछ विलायती चूहे पले हुए थे, जिनकी तीसरी पीढ़ी चल रही थी। एक पिंजड़े में एक तोता था, जो तरह-तरह की बोलियां बोलता था। वह बात ही बात में बहुत बड़ी हरी मिर्च खा जाता था, जिसको देखते ही राम का जी घबराने लगता था।

सबसे अजीब बात यह थी कि टाम और मोती में कोई खास झगड़ा नहीं था। टाम की तरफ से तो कोई झगड़ा रहता ही नहीं था और वह ऐसा बरताव करता था, मानो वह मोती को देख ही न पाता हो। पर मोती कई बार गुस्ताखी कर जाती थी। कई बार वह टाम के मुंह के पास से कौर छीन लेती थी। ऐसे समय टाम को बहुत गुस्सा आता था, पर वह गुर्रा कर, फिर कुछ सोच कर दूसरी तरफ मुंह फेर लेता था जैसा कि बड़ों को करना चाहिए।

टाम विलायती चूहों की भी रक्षा करता था। कई बार गलती से चूहों का घर खुला रह जाता था और चुहे बेखौफ बाहर निकल जाते थे। मोती के मुंह में लार टपकने लगती थी और वह फौरन घात लगाती थी, पर टाम ऐसे मौकों पर मोती की बात बिल्कुल चलने नहीं देता था। एक बार मोती चूहों पर झपटी, तो टाम ने झपट कर उसे धीरे से एक पंजा छुआ दिया, जिससे मोती फुफकार कर पीछे हट गई। इतने में घर के लोग आ गए और चूहों को उनके घर में बन्द कर दिया गया।

मोती तोते की घात में भी रहा करती थी, पर टाम उसका भी रक्षक था और दूसरी बात यह थी कि तोता जिसका नाम गंगाराम था, अपना रक्षक आप भी था। उसका पिंजड़ा कभी खुला भी रह गया तो वह ऊपर होता था। इसके अलावा गंगाराम को अपना घर इतना पसन्द था कि दरवाजा खुला रहने पर भी वह उसने निकलने का नाम नहीं लेता था। असली बात तो यह है कि उसे उड़ना भी नहीं आता था, क्योंकि उसे बचपन में ही पकड़ लिया गया था। तब उसके पंख बहुत छोटे थे और उनमें उड़ने की ताकत नहीं थी।

राम ने जब ये बातें देखीं तो घर लौटकर उसने जिद्द पकड़ी कि वह भी एक तोता पालेगा। कुत्ता जिम तो घर में पहले से ही मौजूद था।

मां ने समझाया—बेटा! तुम्हारे घर में कुत्ता तो पला ही हुआ है, मन चाहे तो चूहें भी पाल लो। पर तोता पालना ठीक नहीं, क्योंकि तोता जंगल का जीव है और उसे पिंजड़े में रहना कभी पसन्द नहीं आ सकता।

राम ने कहा—तो फिर कुत्ते को भी छोड़ दिया जाए।

मां बोली—नहीं। कुछ जानवर ऐसे होते हैं जो आदमी से इतने हिले हुए होते हैं कि उसके सहारे के बिना वे जिन्दा नहीं रह सकते। कुत्ता ऐसे ही जानवरों में है। विलायती चूहा भी ऐसे ही जानवरों में हैं। यदि विलायती चूहे को छोड़ दिया जाए तो फौरन ही उसे कोई न कोई जानवर खा जाएगा। पर तोते की बात और है।

राम नहीं माना, बोला—चाचा के यहां तो तोता पला है, इससे कौन-सा अनर्थ हो गया। मैं जरूर तोता पालूंगा और मैं उसे पढ़ना सिखाऊंगा।

जब राम के मां-बाप ने यह हालत देखी तो उन्होंने जामा मस्जिद के बाजार से एक तोता खरीद दिया। तोता पिंजड़े में रखा गया तो उसने दो दिन तक दाना-पानी नहीं लिया। शायद उसने पहले से ही खाना-पीना छोड़ रखा था।

राम इससे बहुत दुखी हुआ। तब उसके पिता ने कहा—मालूम होता है कि जिसने इसे जंगल से पकड़ा है, उसने इसे काफी डराया है। इसीलिए वह आदमी को देखते ही पिंजड़े के दूसरी तरफ भागने लगता है। दो-चार रोज प्यार से अच्छी-अच्छी चीजें खिलाओ, तब यह समझ जाएगा कि तुम इसे कोई नुकसान नहीं पहुंचाना चाहते।

तीसरे दिन तोता कुछ-कुछ खाने लगा। दो-चार दिन में तो नहीं, कुछ सप्ताह बाद तोते ने डरना छोड़ दिया, खाना तो उसने पहले ही शुरू कर दिया था। पर राम देखता था कि तोता खुश नहीं रहता था, खास कर जब आसमान में उड़ान भर रहे तोतों की कतारें दिखाई देती हैं।

राम ने यह सब देखा। राम की मां ने भी देखा। पर राम की मां ने राम को कुछ नहीं कहा, क्योंकि वह राम को तकलीफ पहुंचाना नहीं चाहती थी।

एक दिन राम ने खुद ही कहा—मां! यह तोता तो बहुत दुखी रहता है।

मां चुप रही।

राम बोला—जब बाहर के तोते आते हैं, तो यह बहुत बेचैन हो जाता है, तब इसे शायद अपने जंगल वाले दिन याद आते हैं।

मां अब भी चुप थी।

राम बोला—कई दिन से एक तोता उसके पास आकर बैठता है और दोनों आपस में न जाने क्या-क्या बातचीत करते हैं।

मां अब भी चुप रही।

राम फिर बोला—जब वह तोता चला जाता है तो हमारा तोता देर तक अफसोस में रहता है और बीच-बीच में बुरी तरह चीखता है।

मां ने फिर भी कुछ नहीं कहा।

कई दिन बीत गए।

तब राम ने कहा—मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि यह तोता बहुत दुखी है।

मां ने कहा—दुखी तो होगा ही, वह ठहरा जंगल का जीव, वह पिंजड़े में सुखी कैसे हो सकता है?

उस दिन मां और बेटे में इतनी ही बातचीत हुई। पर शाम के समय राम को बुखार आया और वह तेज बुखार में तोते की ही बातें करता रहा।

तब मां ने उसे समझाया—बेटा, तू इतना अफसोस क्यों करता है। हजारों लोग तोता पाले हुए हैं। तुम्हारे चाचा ने ही तोता पाल रखा है। फिर तुम इतने दुखी क्यों हो?

राम कुछ नहीं बोला। बुखार जारी रहा। डाक्टर ने बताया कि कोई घबराने की बात नहीं है। यों ही कहीं धूप या हवा लग गई होगी, इसलिए बुखार आ गया।

तीन दिन तक इलाज करने के बाद बुखार कुछ उतरता मालूम हुआ। पर राम न किसी से बात करता था और न कोई चीज ठीक से खाता था। एक दिन जब बुखार उतर गया, तब राम ने पहली बात यह कही—अब मैं तोते को छोड़ दूंगा।

मां की आंखें चमक उठीं, बोली—अगर इससे तुम्हें खुशी होती हो, तो तुम बेशक इसे छोड़ दो।

छोड़ने का इरादा कर लेने पर भी राम तोते को फौरन न छोड़ सका। उसने कहा—जिस वक्त इसका साथी तोता आएगा, जो इससे बातचीत करता था, उसी वक्त मैं इसे छोड़ूंगा।

पर ऐसी अजीब बात हुई कि उस दिन के बाद वह बाहर वाला तोता आया ही नहीं। राम ने दो दिन तक उसका इन्तजार किया, फिर उसने पिंजड़ा खोलकर तोते को बाहर कर दिया।

इस पर तोते को पहले तो अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ, फिर जब उसने देखा कि वह पिंजड़े के बाहर है तो उड़ते हुए उसे एक बार गश आ गया और वह नीम के पेड़ के नीचे घास पर गिर पड़ा। वहां से वह संभल कर उठा और फिर राम के छोटे से बाग की घेरे वाली झाड़ियों में बैठा। इसके बाद वह एक उड़ान भर कर नीम तक पहुंच गया। फिर पता नहीं कहां से एकाएक उसके पैरों में ताकत आ गई और वह वहां से एकदम आकाश में उड़ गया तथा उड़ते हुए आंखों से ओझल हो गया।

राम को यह देख कर बहुत खुशी हुई।

धीरे-धीरे दो साल बीत गए। राम कभी-कभी जब आसमान में तोतों की कतारें देखता, तो सोचता था कि पता नहीं इनमें कौन-सा मेरा तोता होगा। कभी-कभी वह सोचता कि सम्भव है, उस तोते को इन तोतों में जगह न मिली हो और उसे किसी कौवे आदि ने मार डाला हो। वह कई बार अपनी मां से इस सम्बन्ध में बातचीत करता था, तब मां कह देती थी कि वह जरूर अच्छी तरह होगा। तुमने तो अपनी ओर से अच्छा ही किया, फिर वह अच्छा क्यों न रहेगा।

राम की तन्दरुस्ती कभी भी बहुत अच्छी नहीं थी, पर इधर कुछ दिनों से वह ज्यादा बीमार रहने लगा था और इससे उसके माता-पिता बहुत चिन्तित रहते थे।

एक दिन वही बात हुई, जिसका उसके माता-पिता को डर था। राम एकाएक बहुत बीमार पड़ गया।

डाक्टरी इलाज होने लगा और तरह-तरह की शीशियों में दवाइयां आ गईं, इंजेक्शन भी लगने लगे। पर राम की हालत धीरे-धीरे बिगड़ने लगी।

यहां तक कि राम के माता-पिता डर गए। और भी बड़ा डाक्टर बुलाया गया, पर रोगी की हालत में सुधार नहीं हुआ।

राम की मां हर समय उसी के पास बैठी रहती थी। अब राम अक्सर बेहोश रहने लगा था। इससे कमरे में बिल्कुल सन्नाटा छाया रहता था।

एक दिन डाक्टर राम को इंजेक्शन लगा कर गया ही था कि उसने आंखें खोलीं और घबरा कर बोला—अरे, अरे, खिड़की बन्द क्यों है? खोल दो। क्या तुम लोग मुझे मारना चाहते हो?

राम की मां ने कहा—बेटा, ऐसा नहीं कहते। तुम हो, तभी मैं हूं। डाक्टर ने खिड़की खोलने को मना किया है।

पर राम बोला—खिड़की खोल दो। डाक्टर कुछ नहीं जानता। मेरा तोता... कह कर वह फिर बेहोश-सा हो गया। राम की मां बड़ी देर तक असमंजस में रही। फिर उसने खिड़की का एक पल्ला खोल दिया।

उस दिन रात को राम की हालत बहुत खराब हो गई। जब राम के पिता ने इस बारे में डाक्टर से पूछा तो डाक्टर ने कुछ साफ-साफ नहीं कहा और इंजेक्शन देकर माथे का पसीना पोंछते हुए कमरे से चुपचाप निकल गया।

राम के पिता समझ गए कि आज रात को खतरा है। इसलिए माता-पिता दोनों जागते रहे।

आखिर रात तो किसी तरह बीत गई। पूरब में पौ फटने लगी। राम की मां रात भर जागने के कारण अब कुर्सी पर पड़ी-पड़ी सो गई। इतने में अचानक कुछ आवाज सुनकर उठी। वह अभी पूरी तरह जाग नहीं पाई थी, कुछ घबराई हुई थी, इसलिए जल्दी से उन्होंने राम की तरफ देखा और बत्ती जलाई।

राम के पिता कमरे में नहीं थे। पर राम तो बिल्कुल आखें खोलकर देख रहा था, बोला—बन्द करो, बत्ती बन्द करो।

राम की मां ने बत्ती बन्द कर दी और पूछा— क्या बात है बेटा, तुम कैसे हो? मुझे जरा झपकी आ गई थी। फिर वह बेटे के पिचके हुए गालों से गाल सटाकर बैठ गई।

राम ने कहा—मां, मेरी अच्छी मां, मैं बिल्कुल ठीक हूं। अभी वह तोता आया था न। वह मुझे एक फल दे गया, जिसे मैंने तुरन्त खा लिया।

राम की मां घबरा गई। उन्होंने सोचा, पता नहीं राम ने क्या खा लिया। उन्होंने जल्दी से उसके मुंह में उंगली डाली। पर वहां तो कुछ भी नहीं था। हां, एक अजीब खुशबू जरूर निकल रही थी, जिसका कोई कारण नहीं मालूम हो रहा था।

राम बोला—अरे तुम क्या खोज रही हो, मां! वह फल तो मैंने खा लिया। जब वह फल देकर जाने लगा, तो उसके पर जंगले से लग गए, उसी की आवाज से तुम जाग गईं। अब मैं अच्छा हो जाऊंगा। तुम चिन्ता न करो।

राम की मां ने सारी बात राम के पिता से और राम के पिता ने डाक्टर से कही। डाक्टर साहब ने कहा—छोटा बच्चा है, ख्याल ही तो है। भला तोता ऐसे कैसे आ सकता है। यह सारी बात कल्पना है।

फिर दो घंटे बाद राम उठ बैठा और शाम तक वह बाहर जाकर बाग में बैठने की जिद्द करने लगा।

राम के पिता ने और डाक्टर साहब ने तो यह विश्वास नहीं किया कि तोता आया था, पर राम की मां ने उस दिन एक कटोरे में अच्छे-अच्छे पके फल, हरी मिर्चें, भीगे हुए चने रखने शुरू कर दिए। तोता नहीं आया पर दूसरी चिड़ियां उन्हें खा-खाकर खुश होती रहीं और राम उन्हें देखकर खुश और तन्दुरुस्त होता रहा। फिर वह कभी बीमार नहीं हुआ।

ठगनगरी की काया पलट

उस गांव का कुछ और नाम तो जरूर रहा होगा, पर लोग उसे ठगनगरी के नाम से जानते थे, क्योंकि वहां के सब लोग ठग थे। उस गांव का कोई भी आदमी खेती-बाड़ी या दूसरा धंधा नहीं करता था। फिर भी सब लोग चैन की बंसी बजाया करते थे और अच्छा खाते-पीते तथा पहनते थे।

ठगनगरी के मर्द अकेले या गिरोह बना कर गांव के बाहर निकल जाते थे और कमाई करके लाते थे। कुछ लोग सोना बनाने का काम करते थे यानी जाकर गांव तथा कस्बे के भोले-भाले लोगों से कहते थे कि हमें चांदी से सोना बनाने की विद्या आती है। पहले तो वे अपनी तरफ से कुछ सोना खर्च करते थे। जब लोगों को विश्वास हो जाता था कि हां, इन्हें कमाल हासिल है, तो वे उनका सामान लेकर चम्पत हो जाते थे।

दूसरे लोग चोरी-उठाईगीरी, ठगी जब जैसा मौका लगा, करते थे। जब वे बाहर से कुछ कमाकर लाते थे, तो सब गांव में बैठकर मजे में खाते थे। जब पैसे खत्म होने लगते थे, तो वे फिर चोरी और ठगी करने बाहर निकल जाते थे।

ये लोग दुनिया भर को ठगते थे। फिर भी इन लोगों ने एक नियम यह बना रखा था कि हम सारी दुनिया में चोरी करेंगे, पर अपने गांव में कोई किसी की चोरी नहीं करेगा, न कोई किसी से झूठ बोलेगा, न कोई किसी को ठगेगा।

कई सौ बरस हो गए थे, पर यह नियम नहीं टूटा था। जहां तक ठगनगरी का सम्बन्ध है, अपने ढंग से वह एक आदर्श नगरी थी, क्योंकि वहां सब एक-दूसरे की मदद करते थे और गांव के अन्दर कोई जुर्म नहीं करता था। वहां लोग घरों में ताला नहीं लगाते थे और न बक्सों में सोना-चांदी छुपा कर रखते थे। कीमती चीजें सामने रखी रहती थीं, पर कोई उन्हें छूता नहीं था।

इसी तरह बहुत से साल निकल गए।

पर एक दिन सब लोगों ने सुना कि ठगनगरी में किसी के घर में सेंध लग गई है और कोई उस घर के सारे जेवर और धन चुरा ले गया है। सारे ठग दौड़ पड़े, चोर की तलाश हुई, पर उसका पता नहीं लगा। तब लोगों ने सिर पीटते हुए जल्दी से ठगनगरी की एक सभा बुलाई।

सभा में सबसे बूढ़ा ठग बोला—भाइयो, अब तो अनर्थ हो जाएगा, क्योंकि हमारा जो कानून था, वह टूट गया।

सभी इस बात को मानते थे। सभी बोलने वालों ने यह कहा कि अब तो हम लोगों का नाश हो जाएगा।

आखिर में बोलते हुए बूढ़े ठग ने कहा—एक बात यह हो सकती है कि जिसने चोरी की है, वह सबके सामने यह बात कबूल करे और चोरी का माल दे दे। साथ ही यह कहे कि वह आगे फिर कभी चोरी नहीं करेगा, तभी हमारा समाज बच सकता है।

बूढ़े के ऐसा कहने पर भी कोई आदमी चोरी स्वीकार करने के लिए खड़ा नहीं हुआ। बूढ़े ने फिर कहा—भाइयो, यह कोई मामूली बात नहीं है। हमारा इतने दिनों का पुराना समाज खत्म हो रहा है और हम नष्ट हो रहे हैं। इसलिए बेहतर यही है कि जिस भाई ने चोरी की है, वह हमसे सारी बात कह दे। हम उसे क्षमा कर देंगे। यही नहीं, अगर उसे किसी बात की कमी है, तो हम उसे पूरी करेंगे।

बूढ़े ने इतना कहकर चारों तरफ देखा, पर कोई खड़ा नहीं हुआ। तब उसने कहा—हमारी ठगनगरी इसीलिए बची हुई है कि हममें एकता है, हम कभी एक-दूसरे के खिलाफ न तो झूठ बोलते हैं, न चोरी करते हैं, न गवाही देते हैं, न किसी तरह की मुखबिरी करते हैं। आज चोरी हुई है, कल मुखबिरी होगी, परसों पुलिस यहां आ जाएगी, फिर हमारा नाश हो जाएगा। सब लोग जेल के अन्दर दिखाई देंगे। इसलिए मैं उस भाई से यही कहूंगा कि वह अपनी चोरी स्वीकार कर ले। समाज के आगे एक व्यक्ति की बिसात ही क्या है?

जब बूढ़ा कह चुका, तो एक नौजवान उठ खड़ा हुआ। सबने अचरज के साथ देखा कि वह तो बूढ़े का ही सबसे छोटा लड़का था, जिसका नाम अजितकुमार था।

अजितकुमार ने सिर ऊंचा करके कहा—मैंने चोरी की है।

बूढ़े ने अजित को देखा, तो उसके पैर कांप उठे, चेहरा फक हो गया। ऐसा मालूम होता था कि वह अभी गिर पड़ेगा। उसके मन को बहुत धक्का लगा। वह ठगों का बड़ा मुखिया था और उसी के सबसे प्यारे लड़के ने नगरी के नियम को तोड़ दिया। बूढ़े की ऐसी हालत देखकर जो आदमी ठगों का छोटा मुखिया था, उसने बूढ़े को बिठा दिया, कहा—दादा, आप बैठ जाइए, मैं सारी बात पूछता हूं।

बूढ़ा बैठ गया। तब छोटे मुखिया ने पूछा—अजितकुमार, तुमने बहुत अजीब बात की। तुम्हें किस बात की कमी थी, जो तुमने इस तरह चोरी की।

अजितकुमार सीना तानकर बोला—हमें किसी बात की कमी नहीं थी। हमें जिस चीज़ की भी जरूरत होती, बापू फौरन हमारे लिए वही चीज़ ला देते थे। इसलिए हमने चोरी किसी कमी की वजह से नहीं की।

—तो फिर तुमने चोरी क्यों का?

अजितकुमार कुछ देर चुप रहा फिर बोला—मेरा बड़ा भाई मुझसे कह रहा था कि तू बैठे-बैठे खाता है। काफी बड़ा हो गया है। अब तू नगरी के बाहर जाकर कुछ न कुछ काम किया कर। जब

मैंने उससे काम की बात पूछी, तो उसने बताया कि अभी तू नौजवान है। तुझे शुरू-शुरू में चोरी ही करनी पड़ेगी। जब कुछ उम्र होगी तभी तुझ पर लोग विश्वास करेंगे और तब तू दूसरी ठग विद्याएं कर सकेगा।

अजितकुमार ने थोड़ी देर सोचकर कहा—जब मैंने देखा कि मुझे चोरी ही करनी है, तो मैंने अपनी नगरी से ही चोरी शुरू कर दी।

—पर क्या तुम नहीं जानते कि हम लोग अपनी नगरी में चोरी नहीं करते?

अजितकुमार बोला—हमारे लिए जैसी अपनी नगरी वैसे सारा मनुष्य समाज। मैं यह समझ नहीं पाता कि हम अपने यहां तो चोरी नहीं करते, फिर दूसरों के यहां क्यों चोरी करते हैं। मुझे तो यह सारा काम ही गलत मालूम होता है और सच तो यह है कि हम जिसे अच्छा काम समझ रहे हैं, उसके मुकाबले मेहनत करके हम कहीं ज्यादा कमा सकते हैं।

मुखिया ने कहा—यह बात क्या हुई? हम मेहनत ही तो करना नहीं चाहते। मेहनत करना तो छोटे लोगों का काम है। जब हमें करतब आता है, तो हम मेहनत क्यों करें।

अजितकुमार बोला—यह बात बिल्कुल गलत है। अगर हम लोग मेहनत करते, तो आज हम बहुत बड़ी धरती के मालिक होते। मेहनत न करने की वजह से हमारे यहां की धरती बंजर हो गई और सब लोग बीमार रहने लगे। सबकी तन्दुरुस्ती खराब है, फिर किसी के मन में शांति नहीं है।

अजितकुमार बोल ही रहा था कि एक और नौजवान उठ खड़ा हुआ, जो छोटे मुखिया का लड़का था। वह बोला—हमें ठग विद्या और चोरी पसन्द नहीं है। हम तो और लोगों ही तरह मेहनत करना चाहते हैं।

इस बार बूढ़ा मुखिया उठ खड़ा हुआ और बोला—बेटा! यह तुम लोग क्या कर रहे हो। तुम लोगों को मेहनत से ही बचाने के लिए हमारे बाप-दादों ने यह सारा प्रपंच रचा था और तुम लोग ऐसी नासमझी की बातें कर रहे हो।

अजितकुमार ने कहा—बाबा, आप गलती कर रहे हैं। एक तो हमारे मन में शांति नहीं है, दूसरे सारी दुनिया में जहां भी हम जाते हैं, लोग हमें ठगनगरी का रहने वाला समझकर हमसे घृणा करते हैं। यह बात सच है कि हम लोग पेट भर लेते हैं, पर पेट भरना ही असली बात नहीं है। हम दुनिया में कुछ कर गुजरना चाहते हैं। हम आपके किसी नियम को मानने को तैयार नहीं हैं। हम इस नगरी को ही अपनी नगरी नहीं, बल्कि इस महान देश को अपनी नगरी बनाना चाहते हैं। हमें कुएं का मेंढक बनना पसन्द नहीं।

इस तरह उस सभा में ज्यादातर नौजवान एक तरफ हो गए और बूढ़े तथा दूसरे लोग दूसरी तरफ हो गए। बड़ा कोहराम मचा और दोनों गिरोहों में झगड़े की नौबत आ गई। तब बूढ़ों ने किसी तरह सभा खत्म कर दी। अगले दिन गांव के बाहर आम के पेड़ के नीचे बूढ़ों की एक सभा हुई, जिसमें बड़ी देर तक बहस होने के बाद लोग इस राय पर पहुंचे कि नौजवान ही सही रास्ते पर हैं। हम लोगों का क्या है, हम लोग तो थोड़े दिन के लिए हैं। अगर वे सही रास्ते पर जाना चाहते हैं तो उन्हें रोकना नहीं चाहिए।

अगले दिन सबको यह बात बता दी गई कि अब कोई बाहर किसी तरह का जुर्म करने नहीं जाएगा। नगरी के चारों तरफ जो खेत थे, उनमें खेती करने की सोची गई। पर किसी को खेती नहीं आती थी और न किसी के पास बैल और हल थे। इसलिए दूसरे गांव के लोगों को वहां बुलाया गया और उन लोगों ने यहां के लोगों को खेती-बाड़ी, पशु-पालन आदि की शिक्षा दी।

थोड़े ही दिनों में गांव का चेहरा बदल गया। बंजर जमीन बाग-बगीचों में बदल गई, खेत लहलहाने लगे। जो लोग अब तक बाहर थे, वे चोरी आदि से माल लेकर घर लौटते तो गांव वाले फौरन ही उन्हें माल वापस करने के लिए मजबूर करते थोड़े ही दिनों में उस नगरी का नाम सारे देश में फैल गया। लोगों ने उसका नाम बदल कर अजितनगरी रख दिया, क्योंकि अजितकुमार ने ही सबकी आंखें खोली थीं।

खोटे रुपये

रायसाहब बहुत दिनों बाद देहात गए। यह देहात तो था, पर इधर बिजली आ चुकी थी, इसलिए कोई खास कष्ट नहीं हुआ। रेडियो साथ में था ही। अखबार देर-सबेर आते ही थे, इसलिए समय मजे में कट गया।

दो महीने कैसे निकल गए, यह पता ही न लगा। जब वे शहर चलने को हुए, तो अपने बूढ़े चाचा के लिए रेडियो छोड़ गए। इस पर चाचाजी बहुत खुश हुए, फूले नहीं समाए। उन्होंने अपने भतीजे के साथ घर का एक कनस्तर घी और जाने क्या-क्या बांध दिया। जब रायसाहब अपनी मोटर पर चढ़ने लगे, तब चाचाजी को एकाएक कुछ याद आया। बोले—अरे भाई, एक बात तो भूल ही गया मैं। मेरे पास कुछ खोटे रुपए पड़े हैं। न चाहने पर भी जब तब एकाध आ गए और इस तरह जमा हो गए।

कह कर वे दौड़े हुए गए और एक थैली लाकर रायसाहब को दी और बोले—मैं तो इन्हें चला नहीं पाया, पर तुम शहर में रहते हो। शायद चला लो।

रायसाहब ने गिनकर देखे तो ग्यारह खोटे रुपए थे। उन्होंने झट से दस का एक नोट और एक का एक नोट निकाल कर चाचाजी को दे दिया और थैली अपने पास रख ली। बोले—आप चिन्ता न कीजिए, मैं इन्हें जरूर चला लूंगा।

चाचाजी 'ना-ना' करने लगे, नोट लौटाने लगे, पर रायसाहब ने गाड़ी रवाना कर दी और बात वहीं रह गई।

रायसाहब के मन में उन रुपयों को चलाने का कतई इरादा नहीं था। उन्होंने जाकर उन्हें लकड़ी के एक बक्स में एक तरफ डाल दिया और उनकी बात बिल्कुल भूल गए।

इसके बाद एक साल बीत गया। रायसाहब ने एक दिन देखा कि एक चौखट में दीमक लगी है। उन्होंने नौकर को बुलाकर डांटा और कहा—इसे फौरन बदलने का बन्दोबस्त करो तथा देखो घर में कहीं और तो दीमक नहीं है।

लछमन पुराना नौकर था। उसने फौरन चौखट पर कीड़ामार दवा छिड़की और घर में लकड़ी का जितना सामान था, उसे ध्यान से देखा और उस पर भी दवा छिड़क दी। ऐसा करते समय उसके हाथ लकड़ी का बक्स वह लगा, जिसमें वे खोटे रुपए पड़े थे। उसने इधर-उधर देखा और रुपयों को अपनी जेब में डाल लिया। था तो वह पुराना नौकर, पर एक साथ ग्यारह चांदी के रुपए देखकर उसका जी ललचा गया और वह अपने को लोभ से न बचा सका।

उसने उन रुपयों को पांच-सात दिन तक यह सोचकर अपने पास रखा कि रायसाहब को याद आए तो वह उन्हें वापस कर दे। पर जब देखा कि उनको इनकी याद ही नहीं है और लकड़ी के बक्से का जिक्र करने पर भी कुछ याद नहीं आया, तो वह रुपए दबा गया।

यों उसके पास अपने काफी रुपए थे, क्योंकि सारी पगार तो बचती ही थी। पर उसे उन ग्यारह रुपयों को अपनी कोठरी में रखना अच्छा नहीं मालूम हुआ। मन गवाही नहीं देता था।

एक दिन उसने इरादा किया कि इन रुपयों को बदल ले। वह चाहता तो सारे रुपए एक साथ बदल सकता था, पर उसके मन में तो चोर बैठा था। इसलिए वह एक रुपया लेकर बाजार में गया और बीड़ीवाले से बोला—एक बंडल बीड़ी दो।

दाम देते समय उसने वही रुपया दिया। पर बीड़ीवाले ने रुपया बजाकर कहा—यह तो खोटा है, दूसरा दो।

लछमन ने दूसरा रुपया दिया और फिर वह एक के बाद एक दुकान में जाता रहा और अन्त में उसका रुपया चल गया। अगले दिन भी उसने एक रुपया चलाया। अब लछमन को पता लग गया कि ये सारे रुपए खोटे हैं।

पर उसने कहा—खोटे हैं तो हुआ करें, मैं तो इन्हें चलाऊंगा।

एक दिन गलती से वह एक बनिये के पास गया, जिसके पास वह पहले एक खोटा रुपया चला चुका था। वह तो पहले से ही भरा बैठा था। जब दूसरा खोटा रुपया देखा तो आग-बबूला हो गया और दोनों में कहा-सुनी होने लगी। लछमन भी दबने वाला नहीं था। कहा-सुनी से हाथा-पाई की नौबत आई।

यहां तक कि भीड़ जमा हो गई और उधर से दरोगा जी जा रहे थे, वह भी आ गए।

दारोगा ने पूछा—क्या बात है? तुम लोग किस बात पर लड़ रहे हो?

बनिये ने कहा—हुजूर, यह खोटा सिक्का बनाता है। परसों यह मुझसे कुछ सौदा ले गया और एक खोटा रुपया दे गया और आज भी खोटा रुपया दे रहा था तो मैंने उसे रोका और उस दिन का रुपया भी लौटाना चाहा तो इस पर यह लड़ने को तैयार हो गया।

दरोगा जी बहुत खुश हुए, जैसे उन्हें जिस चीज की तलाश थी, वह मिल गई, बोले—कई दिनों से खोटे रुपयों की शिकायत आ रही है। मुझसे एक तमोली और तांगेवाला शिकायत कर चुका है—कहकर उन्होंने अपनी जेब से एक रुपया निकाला और कहा—यहां तक कि मुझे भी कोई यह खोटा रुपया थमा गया।

दारोगा ने लछमन से पूछा—तू कहां काम करता है?

तब लछमन ने रुआंसा होकर कहा—मैं रायसाहब रामदास के यहां काम करता हूं। दस साल

से वहां हूं और कभी कोई शिकायत नहीं हुई। दरोगा जी बोले—यह कोई बात नहीं, रुपए का लालच बुरी बला है। जिन्दगी भर की ईमानदारी के बाद भी आदमी बेईमान बन सकता है, तू मेरे साथ चल।

दरोगा ने बनिये से कहा तुम भी चलो और थाने में अपनी रपट लिखवाओ और खोटे रुपए जमा कराओ।

लछमन गिड़गिड़ाने लगा, बोला—आप रायसाहब से पूछ लीजिए, मैं तो बिल्कुल बेकसूर हूं।

दरोगा जी नहीं माने, बोले—घोड़ा घास से यारी करे तो खाए क्या? तू मेरे साथ चल, मैं सारी बात कर लूंगा।

बनिये के बयान पर लछमन हवालात में बन्द कर दिया गया। खबर सुनकर और भी लोग आ गए, जिन्हें लछमन ने खोटा रुपया थमाया था। तलाशी लेने पर लछमन की कोठरी से चार खोटे रुपए और निकले क्योंकि छह तो वह चला चुका था और एक को चलाते हुए पकड़ लिया गया था।

रायसाहब रामदास जब दफ्तर से आए तो उन्हें सारी बातें मालूम हुई और वे बहुत जोर से हंसने लगे। दरोगा जी को टेलीफोन किया और उनको भी सारी बात सुनाई।

दरोगा जी रायसाहब को बहुत मानते थे, क्योंकि रायसाहब अपने इलाके के बड़े आदमी होने के अलावा पहले कई साल असेम्बली के मेम्बर भी रह चुके थे। दरोगा जी बोले—तो क्या उसे छोड़ दूं? आपके बयान पर मैं उसे छोड़ सकता हूं।

पर राय साहब ने हंसते हुए कहा—नहीं-नहीं, दो-तीन दिन हवालात में रहने दीजिए, मेरी चोरी तो उसने की ही है। उसकी सजा तो उसे मिलनी ही चाहिए। फिर जब मुकदमा चलेगा तो मैं उसकी तरफ से गवाही देकर सच्ची बात बता दूंगा।

ऐसा ही हुआ। सात दिन हवालात में रहने के बाद लछमन को अदालत में पेश किया गया। रायसाहब ने सारी बात सच-सच बता दी, जिस पर अदालत में खूब हंसी हुई। अन्त में लछमन को छोड़ दिया गया। रायसाहब उसे अपने साथ लेते गए और वह पहले की तरह उनके यहां काम करने लगा।

रायसाहब की पत्नी ने कहा—दागी आदमी को क्यों घर पर रखते हो?

पर रायसाहब बोले—अब यह पहले से भी ज्यादा ईमानदार रहेगा।

लाल छाता

मंगल अपने मां-बाप का इकलौता लड़का था, इसलिए वे उसे बहुत चाहते थे। वह जो भी चीज मांगता, उसे वह चीज फौरन दी जाती थी। उसके घर में खेलने के लिए ढेर सारे खिलौने थे। इसके अलावा उसके साथी के रूप में टाइगर नाम का एक कुत्ता था जो उसे भौं-भौं करके कभी प्यार जताता, कभी मीठी डांट लगाता, कभी कुछ मांगता।

जब मंगल खिलौने के साथ खेलता तो टाइगर बैठकर देखा करता और कभी उसका मन होता तो वह भी खिलौनों के साथ खेलने लगता था। कई बार तो मंगल को उसका यह खेल पसन्द आता था, पर कभी-कभी उसे उसका खेल अखर भी जाता था। बात यह थी कि टाइगर हर खिलौने को दांतों से पकड़कर उठाता था। इसलिए यदि खिलौना नरम होता तो उस पर दांत का निशान बन जाता था, जिससे कभी-कभी खिलौना खराब हो जाता था।

मंगल जानता था कि टाइगर जानवर है, इस कारण वह हाथ से नहीं खेल सकता। इसलिए एक हद तक उसकी इस बेवकूफी को क्षमा कर देता था, पर कई बार वह उस पर नाराज भी होता था।

पर टाइगर को देखो कि वह कभी मंगल पर नाराज नहीं होता था। वह मंगल के साथ हर समय रहता था। इसलिए मंगल के मां-बाप कभी फिक्र नहीं करते थे कि बच्चा कहां गया, किधर गया।

इधर मंगल को एक नया खिलौना मिल गया था। असल में वह खिलौना नहीं था, पर उसने उसे खिलौने के रूप में ही लिया था। उसके पिता ने उसे एक लाल छाता खरीदकर दिया था और पानी पड़े या न पड़े, धूप हो या न हो, मंगल महज छाता लगाने के शौक से उसे लगाकर इधर-उधर टहलने लगा था। टाइगर को भी यह छाता पसन्द था, जिसका नतीजा यह था कि छाते पर कई जगह दो-दो दांतों के निशान पड़े हुए थे।

यों तो मंगल जब छाता लगाकर जाता, तो टाइगर भी उसके साथ में होता था। एक दिन टाइगर एक कोने में हड्डी चबाने में लगा हुआ था। उसे हड्डी चबाने में बड़ा रस आ रहा था। उधर मंगल चुपचाप छाता लेकर निकल पड़ा। मंगल थोड़ी दूर गया तो पानी पड़ने लगा, जिससे मंगल को बहुत खुशी हुई और वह जोश में आकर बहुत दूर निकल गया। उसे पता नहीं लगा कि वह पहाड़ी पर पंहुच गया है। उस समय पहाड़ी पर कोई आदमी नहीं था, पर मंगल को इसकी परवाह नहीं थी। वह आगे बढ़ता गया, बढ़ता गया, बढ़ता गया।

थोड़ी देर में जब अंधेरा होने लगा, तब मंगल को ध्यान आया कि मैं तो घर से बहुत दूर चला

आया। इसलिए वह लौटने लगा। पर थोड़ी दूर लौट कर उसने देखा कि एक जगह पर दो रास्ते आकर मिले हैं और उसे यह पता नहीं लगा कि किस रास्ते पर जाना चाहिए। तब उसने अभ्यास के अनुसार पुकारा—टाइगर! टाइगर!!

पर वहां टाइगर कहां था! उसने फिर पुकारा—टाइगर! टाइगर!!

टाइगर तो आया नहीं, पर एक काला-कलूटा-सा आदमी उधर से निकला। उसे देखते ही मंगल सहम गया। उस आदमी ने कहा—अरे लड़के, तू कौन है?

तब मंगल ने पीछे हटते हुए कहा—मैं मंगल हूं।

—तू यहां क्यों आया है?

मंगल ने कहा—मैं रास्ता भूल गया। मुझे तुम घर पहुंचा दो।

वह आदमी कुछ सोच कर बोला—ला, अपना छाता मुझे दे दो।

कहकर उसने मंगल से छाता छीन लिया। फिर उसने मंगल की जेबें टटोलीं, पर कुछ नहीं मिला। मंगल को बड़ा गुस्सा आया, पर वह कर भी क्या सकता था।

तब उस आदमी ने कहा—जा-जा, अपने घर जा। और वह मंगल का छाता लेकर चला गया।

आज तक मंगल के साथ किसी ने ऐसा बर्ताव नहीं किया था। इसलिए उसे रोना आ गया, पर पानी बरस रहा था और अंधेरा हो रहा था, इसलिए वह रो भी न सका। सकपका कर रह गया। उसकी समझ में नहीं आया कि अब वह क्या करे। वह थोड़ी दूर तक उसी ओर चला जिस ओर वह जा रहा था, फिर वह एक पेड़ के नीचे रुक गया। इसी तरह रात हो गई।

जब काफी रात हो गई और बरसात बन्द नहीं हुई, तब मंगल को नींद आने लगी और वह पेड़ के नीचे एक बेंच पर सो गया।

उधर जब मंगल घर में नहीं मिला, तो उसके पिता अपने नौकर और टाइगर को लेकर उसे ढूंढते हुए उधर आ निकले। तब वे मंगल को लेकर घर गए।

दो-चार दिन में मंगल सारी बात भूल गया, पर वह अपने छाते को नहीं भूल सका। उसके पिता ने कहा—बेटा, छाते का गम क्यों करते हो, मैं तुम्हें दूसरा छाता खरीद दूंगा।

अगले दिन दूसरा छाता आ गया, पर मंगल ने उसे छुआ भी नहीं। उसके माता-पिता ने सोचा कि बच्चे की सनक है, थोड़े दिनों में ठीक हो जाएगी।

मंगल भीतर ही भीतर दुखी रहता था। वह यही सोचता कि यह कैसी दुनिया है, जहां लोग जबर्दस्ती दूसरे की चीज़ ले लेते हैं और फिर भी उनका कुछ नहीं बिगड़ता।

मां-बाप मंगल के दुख को नहीं समझ पाए, पर टाइगर धीरे-धीरे समझ गया कि बात क्या है। अब मंगल के साथ एक नौकर भी रहता था। इसलिए टाइगर बेफिक्र होकर इधर-उधर घूमने लगा। वह अब बहुधा पहाड़ी की तरफ जाने लगा। यहां तक कि एक दिन वह सूंघता हुआ दूसरी तरफ निकल गया और वहां एक दुकान में पहुंचा, जहां उसने वही लाल छाता देखा। टाइगर का मन तो हुआ कि अभी छाता उठा ले, पर उसने बुद्धि से काम लिया और चारों तरफ देख कर जब वह समझ गया कि वहां कोई नहीं है तो वह छाते को मुंह में लेकर सरपट घर भागा।

मंगल अपना छाता पाकर बहुत खुश हुआ। मंगल के पिता कामकाजी आदमी थे। उन्होंने तो यह देखा कि खोया हुआ छाता आ गया है, पर मंगल की मां ने वह छाता देखा तो मंगल से पूछा—छाता कहां से आ गया।

मंगल ने बताया—टाइगर लाया है।

तब मंगल की मां ने समझा कि लड़का कहीं भूल से छाता जंगल में छोड़ आया होगा, वहीं से कुत्ता उठाकर ले आया है।

पर मंगल ने टाइगर का मुंह चूमकर उससे पूछा तो टाइगर कुछ बता नहीं सका। बस भौं-भौं करता रहा और पहाड़ी की तरफ दौड़ता रहा। मंगल का मन तो हुआ कि वह भी उसके साथ पहाड़ी पर जाए, क्योंकि उसके साथ जाने पर कैसा भी आदमी हो, उससे डरने की जरूरत नहीं थी। लेकिन उसके साथ नौकर था, इसलिए वह चाहते हुए भी पहाड़ी की ओर नहीं जा सका। पर वह रोज टाइगर को लाल छाता दिखा-दिखा कर पूछता रहता—अरे, उस पाजी आदमी का कुछ पता लगा?

पर टाइगर कुछ बता नहीं पाता। वह भौं-भौं करता और अपने पंजे जमीन पर रगड़ता, शायद यह दिखाता कि वह आदमी मिल जाए तो उसके शरीर में इस तरह से नाखून गाड़ दूं।

एक दिन टाइगर फिर पहाड़ी के उस पार गया और उसने ध्यान से उस दुकान को देखा जहां उसे छाता मिला था। वहां दुकानदार के रूप में उसने वही आदमी देखा, जिसने मंगल से छाता छीन लिया था। टाइगर उस दिन मंगल को सूंघ चुका था, जिस दिन वह जंगल में लेटा हुआ मिला था। फिर उसने आज उस आदमी को सूंघा तो उसे दोनों की गन्ध एक मालूम हुई। वह समझ गया कि यही आदमी है जो बना तो भला आदमी है, पर मौका पाकर एक बच्चे से छाता छीनने में नहीं हिचकता।

टाइगर अक्सर उस दुकान के पास आता और उस आदमी को बैठा देख कर लौट जाता। वह कुछ-न-कुछ बेचता रहता, पर टाइगर को मालूम होता रहा कि दुकानदारी तो ऊपरी बात है, वह भीतर ही भीतर कुछ और भी करता है। टाइगर ने इन बातों से पहचाना कि जो लोग आकर उसकी दुकान में घुसते थे, उनके पास कोई-न-कोई गठरी होती थी और वे अजीब ढंग से आते-जाते थे।

टाइगर उन लोगों को देखता रहा। एक दिन टाइगर को वह दुकान फिर अकेली मिल गई और वह भीतर घुस गया। उसे सामने सेर भर की एक थैली रखी मिली, जिसे उसने मुंह में उठा लिया और भागकर मंगल के घर आ गया। उसने वह थैली मंगल के हाथ में दे दी। मंगल ने उसे खोलकर देखा तो पाया कि उसमें तरह-तरह के जेवर थे। मंगल ने यह थैली मां को दिखलाई। मां ने फौरन मंगल के पिता को सारी बात बताई। जब यह मालूम हुआ कि टाइगर यह थैली लाया है तो मंगल के पिता ने सोचा कि यह थैली टाइगर को जंगल में पड़ी मिली होगी।

उन्होंने फौरन वह थैली ले जाकर थाने में जमा कर दी। थाने वालों ने जांच की तो मालूम हुआ कि थैली का सारा माल चोरी का है। मंगल के पिता तो यह मानकर चुपचाप बैठ गए थे कि थैली जंगल में पड़ी होगी, पर थानेदार साहब पुराने आदमी थे। वह फौरन कुत्ते के पास आए और मंगल से बोले—चलो, हम दोनों टाइगर के साथ-साथ चलें।

टाइगर इस सैर के लिए बहुत खुशी से तैयार हुआ। टाइगर आगे-आगे चला और थानेदार तथा मंगल पीछे-पीछे। चार-पांच सिपाही भी सादी पोशाक में पीछे-पीछे चले।

टाइगर पहाड़ी पर पहुंच कर जब दूसरी ओर नीचे उतरने लगा, तब थानेदार साहब कुछ दुखी हुए कि यह कुत्ता न जाने हमें कहां ले जाएगा। पर वह तजुर्बेकार थे, इसलिए उसके पीछे-पीछे चलते रहे कि देखें कहां पहुंचते हैं। तब टाइगर उन लोगों के आगे-आगे चलकर उस दुकान में पहुंचा। वह काला-कलूटा आदमी वहीं बैठकर सिगरेट पी रहा था। उसकी दुकान पर कोई ग्राहक नहीं था। टाइगर उसे देखते ही भौं-भौं करने लगा। मंगल ने भी उसे पहचान लिया और कहा—यह वही आदमी है, जिसने मेरा छाता छीना था।

तब थानेदार साहब ने उस आदमी से पूछा—तुम क्या काम करते हो?

उधर उन्होंने पुलिसवालों को हुकुम दिया कि इसके घर और दुकान की तलाशी ली जाए।

उस आदमी ने जब यह देखा तो वह भागने लगा। पर पुलिसवालों ने उसे दौड़ कर पकड़ लिया। उसकी दुकान और घर की तलाशी लेने पर हजारों रुपए का चोरी का माल बरामद हुआ और उससे सैंकड़ों चोरियों का पता लगा।

थानेदार ने मंगल और टाइगर को धन्यवाद दिया। कई चौर पकड़े गए। थानेदार साहब ने अफसोस करते हुए कहा—साहसी कार्य करने के लिए कुत्ते को सरकारी पदक नहीं मिल सकता, नहीं तो इसे इनाम जरूर मिलता।

होनी

एक था राजा। उसकी कोई रानी न थी। उसके मंत्री बराबर उसे सलाह देते थे कि महाराज आप जल्दी शादी कर लें, रानी के बिना सिंहासन और राज्य सूना-सूना मालूम होता है।

पर राजा ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। राजा को शिकार का बहुत शौक था। राजकाज के बाद जो समय बचता, उसे वह शिकार में लगा देता था। महल में एक से एक बड़े बाघ, सिंह, गैंडे, घड़ियाल आदि की खालें जमा थीं। जहां देखो बस खालें, सींग ही दिखाई देते थे।

लोग रानी की मांग करते-करते थक गए। दूसरे देशों के राजा भी संदेश भेजते-भेजते हार गए और समझ गए कि राजा को शादी नहीं करनी है। राजा तो शिकार में लगा रहता था उसे दूसरी बात की फिक्र ही नहीं थी। हां, उसकी आदत जरूर थी कि शिकार करते-करते जिधर निकल जाता, उधर के गांव और कस्बों में क्या हो रहा है, लोग कैसे रहते हैं, सुखी हैं या दुखी, सरकारी अमला न्याय करता है या नहीं, यह सब भी देख लिया करता था।

एक दिन राजा एक जंगली सुअर का पीछा करते-करते बहुत दूर निकल गया और अपने साथियों से बिछुड़ गया। जब सुअर का पीछा करते हुए उसे कई घंटे हो गए तो राजा बहुत थक गया लेकिन उसने पीछा करना नहीं छोड़ा। संध्याकाल तक राजा घोड़े पर सवार होकर उसका पीछा करता रहा। ठीक सूर्यास्त के समय घोड़ा बेहोश होकर गिर पड़ा। तब जाकर राजा ने शिकार का पीछा छोड़ा।

उसका मन तो यही चाह रहा था कि घोड़े को वहीं छोड़ कर पैदल शिकार का पीछा करे, पर घोड़ा बहुत प्यारा था, उसने राजा को कई बार बड़ी-बड़ी विपत्तियों से बचाया था। हां, यदि घोड़ा मर जाता तो बात और थी, पर घोड़ा तो केवल थक कर बेहोश हो गया था। इसलिए राजा घोड़े को होश में लाने के लिए पानी की तलाश करने लगा। सौभाग्य से पास ही एक सुन्दर तालाब मिला और राजा वहां से पानी भर कर घोड़े के लिए ले आया। घोड़ा थोड़ी ही देर में स्वस्थ हो गया। अब शिकार का पीछा करने की बात नहीं थी, अब तो किसी तरह लौटने की बात थी पर रात में लौटना भी असम्भव था, इसलिए राजा ने रात काटने की तैयारी की।

राजा आगे-आगे चलता रहा और घोड़ा कुत्ते की तरह उसके पीछे-पीछे चलता रहा। दोनों उसी तालाब के पास पहुंचे। राजा ने घोड़े पर से जीन उतार ली और घोड़े को घास चरने के लिए इशारा कर दिया। स्वयं वह रात काटने के लिए किसी स्थान की तलाश करने लगा। अभी कुछ रोशनी थी, उसमें यह दिखाई पड़ा कि पास ही एक कुटिया है।

राजा उस कुटिया में गया तो अन्दर देखा कि तेल का दिया जल रहा है और बहुत बढ़िया बिस्तर लगा है। राजा ने जोर से चिल्लाकर पुकारा—"कोई है!" पर कहीं से कोई उत्तर नहीं आया, सिर्फ उसकी प्रतिध्वनि लौट आयी। तब राजा उस कुटिया के अन्दर घुस गया और भीतर जाकर देखने लगा कि वहां क्या है। अन्दर एक दूसरी कोठरी थी, जिसमें तरह-तरह के फल, ठण्डा पानी और अन्य ऐसी ही चीजें रखी हुई थीं जो शहर वालों को ही मिल सकती हैं। राजा ने एक बार फिर आवाज दी, पर किसी ने उत्तर नहीं दिया। राजा बहुत भूखा-प्यासा था, पर फिर भी उसने तीसरी बार आवाज दी। इस बार भी उसे कोई नहीं मिला।

राजा ने एक मिनट तक सोचा और फिर खाने में जुट गया। इसके बाद वह पानी पीकर उस बिस्तर पर सो गया। पता नहीं वह कितनी देर तक सोया होगा कि अचानक उसे कोई आवाज सुनाई पड़ी। जब उसने आंखे खोलीं तो देखा कि ऋषि की तरह दाढ़ीवाला एक महात्मा उसके सामने खड़ा है। उसकी आंखें लाल थीं। राजा फिर भी उससे नहीं डरा, क्योंकि ऋषि से क्या डरना। तब वह दाढ़ीवाला आदमी क्रोध में बोला—बहुत दिनों से मैं सुनता था कि तू बड़ा अविवेकी और अन्यायी है, पर आज मैंने अपनी आंखों से तेरी करतूत देख ली है। तुझे बिना अनुमति के मेरा खाना खाने और मेरे बिस्तर पर सोने की हिम्मत कैसे हुई?

राजा बिस्तर से उठते हुए बोला—महाराज, मैं शिकार करता हुआ इधर चला आया। मैं नहीं जानता था कि इधर कोई रहता भी है। मैंने तीन बार आवाज दी। जब कोई नहीं आया, तो मैंने खाना खाना स्वीकार किया। मैं मानता हूं कि मुझसे अपराध हो गया, पर इसका जो भी मुआवजा आप लेना स्वीकार करें, उसके लिए मैं तैयार हूं।

वह दाढ़ीवाला आदमी बोला—उसमें तेरी क्या बड़ाई है? जब बडे-से-बड़े अपराधी भी अपराध करते हुए रंगे हाथों पकड़ लिए जाते हैं तो वे इसी प्रकार से मुआवजा देना स्वीकार करते हैं और कहते हैं कि जो कुछ हुआ सो अनजाने में हो गया।

राजा बोला—महाराज, अब तो जो कुछ होना था, सो हो चुका है। अब आप जो सजा दें, उसके लिए मैं तैयार हूं।

इस पर वह दाढ़ीवाला आदमी पसीजता हुआ प्रतीत हुआ। पर उसने बनावटी क्रोध दिखलाते हुए कहा—इसमें कोई शक नहीं कि तू बहुत चतुर है। जो लोग इस तरह की बातें कहते हैं कि मुझे जो चाहे सो सजा दे दीजिए, उनका मतलब यही होता है कि उन्हें सजा न दी जाए। वे सोचते हैं कि कायरता से प्रभावित होकर सजा देने वाला रहम खाएगा और उन्हें कोई सजा नहीं देगा।

राजा बोला—महाराज, आप तो व्यर्थ में बात का बतंगड़ बना रहे हैं। आप मुझे सजा देकर देखिए कि मैं उसे कबूल करता हूं या नहीं।

दाढ़ीवाले व्यक्ति ने राजा से कहा—यदि यह बात सच है तो तू मुझे यह बता कि यदि मैं तेरे राज्य में जाकर किसी गृहस्थ के घर में घुस जाऊं और उसको हाजिर न पाकर उसका खाना खा लूं, उसके घर पर कब्जा जमा लूं, तो तू मुझे क्या सजा देगा?

राजा सोच कर बोला—"मैं उसके हाथ कटवा दूंगा।"

—यदि तू उसकी बातें सुनकर और उसके हाल पर रहम खाकर हाथ न कटवाना चाहे तो क्या सजा देगा?

—तो मैं उसे पांच साल के लिए कारागार में डलवा दूंगा और उसके पैरों में भारी बेड़ियां होंगी, जिससे वह फिर बुरा कर्म न कर सके।

दाढ़ीवाला आदमी बोला—तो सुन, मैं तुझे यही सजा देता हूं। तुझे यहीं पर इसी कुटिया में कैद करता हूं। पांच साल तक तू कहीं नहीं जा सकेगा। बेड़ी डलवाने के बजाय मैं तेरा ब्याह अपनी कन्या से कर देता हूं, क्योंकि ब्याह से बढ़कर कोई बेड़ी नहीं है।

राजा बहुत असमंजस में पड़ा और बोला—महाराज, पांच साल तक कैद रहना तो मुझे मंजूर है, पर विवाह करने की मेरी इच्छा नहीं है।

तब दाढ़ीवाला व्यक्ति हंसा और बोला—सब मामलों में इच्छा थोड़े ही चलती है। तू यह नहीं

देखता कि मैं तुझ पर रहम कर रहा हूं। यदि तुझे यह भ्रम है कि तू ऊंचे कुल में पैदा हुआ है और मैं कोई साधारण व्यक्ति हूं, तो सुन, तेरा राज्य कभी मेरे पिता का था। मेरे पिता ने बुढ़ापा आने के कारण मुझे गद्दी पर बैठाकर इस कुटिया में रह कर वानप्रस्थ जीवन बिताना शुरू किया। तब तेरे पिता तथा अन्य कई लोगों ने मिलकर हमारे राज्य को बांट लिया और इस प्रकार से तू राजा बन गया और मैं आज एक भिखारी हूं। बाद में मैंने यहां आकर अपने पिता के साथ तपस्या की तो मेरी समझ में आ गया कि राज्य करने में कुछ नहीं धरा है। इसलिए मैं तपस्या करता हूं और यहीं रहता हूं, पर कभी मैं गृहस्थ था। उसी की निशानी एक कन्या बची है, वरना मुझे तो तुझे मार कर अपना राज्य लेना चाहिए था।

राजा बोला—मुझे यह जान कर बहुत ही खुशी हुई है कि आप राजा हैं तथा राजपुत्र हैं। पर विवाह के सम्बन्ध में मैं कुछ नहीं कर सकता। आपका राज्य है तो आप वापस ले लें। आप चाहें तो मुझे जन्म भर कैद रखें, पर विवाह के लिए मुझे मज़बूर न कीजिए।

तब वह दाढ़ीवाला व्यक्ति बोला—मैं पहले ही बतला चुका हूं कि मुझे राज्य करने की लालसा नहीं है। मैं यह समझ चुका हूं कि उन बातों में कुछ सार नहीं है। मानसिक शांति ही असली चीज है। पर अपनी बच्ची को मैंने वैराग्य की शिक्षा नहीं दी, उसे मैंने राजसी शिक्षा दी है। वह घोड़े पर सवारी करने, अस्त्र चलाने तथा अन्य विद्याओं में निपुण है। सच तो यह है कि वह इस समय अपनी सेना सहित तेरे राज्य पर चढ़ाई करने गई है।

दोनों इस प्रकार बातचीत कर रहे थे। राजा किसी भी तरह शादी करने को तैयार नहीं हो रहा था। इतने में बाहर बहुत से घोड़ों की टाप सुनाई दी और थोड़ी ही देर में उस कुटिया में मानो अन्धकार से बिजली की तरह, एक वीरांगना प्रकट हुई, जिसमें अपने पिता से मिलते हुए कहा—राजा तो राजधानी छोड़कर चला गया है। मैंने फौरन हमला बोल दिया और अब राजधानी पर मेरा कब्जा हो गया है। मैं आपको यही शुभ समाचार देने के लिए आई हूं। ऋषि बहुत उधेड़बुन में पड़ गए और बोले—बेटी, तुमने तो यह साबित कर दिया कि तुम एक वीर कन्या हो और राज्य पर तुम्हारा अधिकार भी हो गया, पर तुम तो जानती हो कि मुझे राज्य करने का शौक नहीं है। मैं तुम्हें सिंहासन पर बैठा देखकर ही खुश हो जाऊंगा।

इतने में राज-कन्या का ध्यान पिता के सामने खड़े राजा की ओर गया। उसने पूछा—पिताजी, यह महाशय कौन हैं!

पिता ने कहा—बेटी, कौन क्या है इसका असली परिचय तो उसके कर्म ही दे सकते हैं। मैंने इस व्यक्ति को यहां पर अपनी कुटिया में अनाधिकार प्रवेश करके तथा मेरा खाना खाकर मेरे बिस्तर पर सोते हुए पाया। मुझे तो यही मालूम है कि यह कोई अच्छा आदमी नहीं है। पर तू इस समय राज्य की अधिकारिणी है, इसके साथ जैसा चाहे, वैसा न्याय कर सकती है।

कन्या बोली—पिताजी, मुझे तो यह व्यक्ति कुछ बुरा नहीं मालूम दीखता। सम्भव है कि किसी

कारण से थक कर या संसार से निराश होकर यह इधर आया हो और कुटिया और सरोवर का सौन्दर्य देखकर इस स्थान में रह गया हो।

दाढ़ीवाला व्यक्ति हंस कर बोला—तू तो भोली है। समझती है कि किसी व्यक्ति को उसके चेहरे से पहचाना जा सकता है। पर यह बात नहीं है, चेहरा कई बार धोखा दे जाता है। मैं तो इसे उसी रूप में देखता हूं, जिस रूप में इसे पाया है। हां, तू इस समय राज्य की अधिकारणी है, यदि चाहे तो इसे क्षमा प्रदान कर सकती है और क्षमा-प्रदान अच्छा भी होता है, क्योंकि कहा गया है कि बड़ों को क्षमा शोभा देती है। इसके अलावा, तेरा यह पहला मुकदमा है, तुझे दया दिखानी ही चाहिए।

ये लोग इस प्रकार बात कर ही रहे थे कि इतने में एक सूअर भीतर आ गया और मनुष्य की बोली में बोला—मुझे अभी-अभी मालूम हुआ कि आप महारानी बन गई हैं, इसलिए मैं न्याय के लिए आया हूं।

उसे आदमी की बोली में बोलता देखकर तीनों आश्चर्य में पड़ गए। अन्त में किसी तरह अपने को संभाल कर दाढ़ीवाला आदमी बोला—कैसा न्याय?

तब सूअर ने सारी कथा सुनाई।

इस पर वह कन्या बोली—अच्छा! तो यह वही राजा साहब हैं जिनकी तलाश में हम लोग परेशान थे। इनको तो हमें गिरफ्तार करना ही था, अब अच्छा बहाना मिल गया। घर बैठे शिकार मिल गया।

इस पर सूअर ठहाका मार कर हंसा। दाढ़ीवाले व्यक्ति ने कहा—ओ सूअर, तुम हंसते क्यों हो?

सुअर बोला—महाराज, मैं इसलिए हंसा कि यह 'शिकार' शब्द बड़ा अजीब है। जब मैं प्राणों के भय से भाग रहा था और यह तरुण राजा मेरे पीछे आ रहा था, उस समय मैं इसका शिकार था। अब यह राजा आपका, आपकी कन्या का और मेरा शिकार है। इसलिए मैं हंस रहा था।

दाढ़ीवाले व्यक्ति ने सूअर की बात को अनसुनी करते हुए कहा—बेटी, यह मत भूलो कि यह व्यक्ति तुम्हारे घर पर ही तुम्हारा अतिथि और शरणागत है। फिर भी इसको कुछ सजा तो मिलनी ही चाहिए, इसलिए मैंने यह तय किया है कि तुम इसको अपना अर्दली बना लो, जिसका सबसे अच्छा तरीका इससे शादी कर लेना है। इस प्रकार यह तुम्हारा कैदी भी हो जाएगा और प्रजा भी सुखी होगी।

जब यह बात कही गई तो सूअर ने अपना रूप छोड़ कर मनुष्य का रूप धारण कर कहा—मुझे पुराने लोग धर्म कहते थे, पर मेरा दूसरा नाम होनी भी है। जो बात होने वाली होती है, वह यद्यपि होती तो अन्य कारणों से है, पर मैं उसका कारण बन जाता हूं।

वह इस तरह बात कर ही रहा था कि एकाएक वह गायब हो गया। सब लोग आखें मलते रह गए। न तो वहां सूअर था और न कोई आदमी।

बताने की जरूरत नहीं है कि राजा और उस कन्या का विवाह हो गया और दोनों सुख से रहने लगे।

परोपकारी बन्दर

एक जंगल में बन्दरों का एक बड़ा-सा गिरोह रहता था। पता नहीं कितने सौ वर्षों से वह वहीं रहता चला आया था। इस गिरोह के बन्दर बहुत सुख से रहते थे, क्योंकि एक तो वहां कई अच्छे फलों के पेड़ थे और पानी भी पास ही था। दूसरी बात यह थी कि वहां कोई ऐसा जानवर नहीं था, जिससे उनको भय हो।

पर एक दिन उनकी इस अमन-चैन की जिन्दगी में एक नया बुलबुला उठा। पता नहीं कैसे एक बन्दर को मालूम हुआ कि आदमी जंगल काटते-काटते बहुत पास तक आ गए हैं और जहां जंगल था, वहां खेती शुरू हो गई है। उस बन्दर ने बताया—खेती में ऐसी-ऐसी चीजें पैदा होती हैं, जिनका हमने कभी नाम भी नहीं सुना। कहते हैं कि वे चीजें खाने में बहुत अच्छी हैं।

जो बूढ़े बन्दर थे, यह खबर सुनकर खुश नहीं हुए। उन्होंने कहा—जब आदमियों ने जंगल काटना शुरू कर दिया है, तो वे देर-सबेर में यहां भी आ जाएंगे। हमने पुरखों से सुना है कि आदमी है तो बहुत कमजोर जानवर, पर उसने बुद्धि बहुत पाई है। उस बुद्धि से वह सभी कुछ कर लेता है। जब वह इतना पास आया है, तो आगे भी बढ़ेगा। फिर हमारी शामत आ जाएगी।

पर जो नौजवान बन्दर थे, उन्होंने इस खबर को दूसरे ही ढंग से लिया। उनमें से एक बोला—जंगल के फल-फूल खाते-खाते हम लोग ऊब गए हैं और यह खुशी की बात है कि आदमियों की बस्ती पास ही आई है। अब हम लोग रात को वहां धावा बोला करेंगे और नई-नई चीजें खाकर जीने का आनन्द लेंगे।

बूढ़े कहते ही रह गए और एक दिन नौजवान बन्दरों ने रात को आदमियों के खेतों पर हमला बोल दिया। सचमुच आदमी बड़े गुणी थे। बन्दरों ने नई-नई चीजें खाईं, तो वे बहुत खुश हुए और लौटकर बूढ़ों को सुना-सुना कर उन चीजों की तारीफ करने लगे। कुछ बन्दर तो अपने साथ गेहूं की एक छोटी-सी बोरी भी उठा लाए थे।

इन्हें सफल होता देखकर नौजवान बन्दरों के साथ कुछ बूढ़े बन्दर भी अब खेतों पर धावा बोलने में शामिल होने लगे। इनमें एक बन्दर था, जिसका नाम बन्दरों की भाषा में 'आनन्द' था। उसने देखा कि बन्दर उन धावों में जो कुछ खाते हैं, सो तो खाते ही हैं, पर उससे चौगुना नष्ट करते हैं।

आनन्द ने बन्दरों को समझाया—भाई, यह बात अच्छी नहीं, जितना खाना हो खाओ, पर चीजों को बर्बाद न किया करो।

ऋषभ नाम का तगड़ा बन्दर इस पर बहुत नाराज हुआ। वह कई तरह के मुंह बनाकर बोला—जाने तेरी कैसी भ्रष्ट बुद्धि है जो तू ऐसी बातें करता है। हम लोग तो खाएंगे भी और आदमियों को नुकसान भी पहुंचाएंगे।

आनन्द ने कहा—पेट भर खाने में कोई हर्ज नहीं, पर मैं तुम्हारे इस छिछोरे कार्यक्रम में शामिल नहीं हो सकता।

धावे वाले गिरोह में जो बूढ़े बन्दर थे, वे आनन्द की बातों के कायल थे, पर ऋषभ के डर के मारे कोई कुछ नहीं बोला। तब आनन्द ने कहा—मैं तुम लोगों के साथ नहीं रहना चाहता, क्योंकि मैं यह मानता हूं कि बन्दर होने के नाते आदमियों की चीजों पर हमारा कुछ हक है। आखिर वे हमारी ही जाति के हैं, पर इसी नाते हमारा यह भी कर्तव्य होता है कि हम उनकी चीजों को बर्बाद न करें।

सब बन्दर इस पर बहुत नाराज हुए। ऋषभ बोला—तू हमें डर क्या दिखाता है? कल जाना हो तो आज ही चला जा। हम लोग तेरा मुंह नहीं देखना चाहते। तेरे जैसे बन्दर को हम अपनी जाति के लिए कलंक मानते हैं। वह बन्दर क्या, जिसमें बन्दरपन न हो। तुझे तो किसी आदमी के यहां पैदा होना चाहिए था, जो कपड़े पहनकर अपनी असलियत को छिपाते हैं। हम नंगे ही भले हैं।

आनन्द उसी दिन चुपचाप एक दूसरे जंगल में चला गया और वहीं अकेला रहने लगा। अब वह जंगल के फल-फूल खाकर ही गुजर करता और किसी से कोई वास्ता न रखता था। हां, नदी के किनारे के कछुए से उसकी कुछ दोस्ती हो गई, क्योंकि इन दोनों के विचार बहुत मिलते थे। विचारों के मिलने से जो दोस्ती होती है, वह बहुत पक्की होती है। दोनों अक्सर नदी किनारे बैठकर सुख-दुख की बातें किया करते। इस प्रकार उनका समय आनन्द से कट जाता था। कभी-कभी बन्दर कछुए की पीठ पर बैठकर नाव की सैर का मजा लेता था।

एक दिन आनन्द अपने जंगल में घूम रहा था। सोने का समय होने ही वाला था कि इतने में उसने देखा कि एक आदमी उस जंगल में घूम रहा है। आनन्द एक डाल पर चुपचाप बैठ गया और देखने लगा कि वह क्या करता है। उसने सोचा कि शायद यह आदमी इस जंगल को काटने की फिक्र में आया हो। पर वह आदमी थोड़ी ही देर में इधर-उधर जाने क्या देखकर चला गया।

अगले दिन सेवेरे बन्दर ने कछुए से सारी बात कह सुनाई। सुनकर कछुआ कुछ दुखी हो गया, बोला—पता नहीं, क्या विपत्ति आएगी। शायद ऋषभ के गिरोह ने कहीं धावा बोला होगा और उन्हीं को ढूंढते हुए आदमी आया होगा। मुझे यह सारी बात बहुत बुरी मालूम होती है। खैर, इसमें चिन्ता करने की कोई बात नहीं, क्योंकि जब विपत्ति आएगी, तभी उससे निपटा जा सकता है। उससे पहले बेकार शंका करके कष्ट पाने की जरूरत नहीं। कहा भी है कि बहादुर एक बार मरता है, जबकि कायर बार-बार मरता है।

आनन्द ने भी उसकी बात सही समझी। हां, उसके मन में एक खटका जरूर लगा रहा।

दिन भर कुछ नहीं हुआ। पर रात के समय आनन्द अपने बरगद के पेड़ पर सो रहा था कि इतने में उसे कुछ आहट मिली, जैसे बहुत से लोग सूखे पत्तों पर चल रहे हों। उसने सोचा कि कोई विपत्ति आ गई है।

पर अपने मित्र कछुए की बात मानकर वह चुपचाप पड़ा रहा और देखता रहा कि अब क्या होता है। थोड़ी देर में उसने देखा कि एक बत्ती जलाई गई। उस बत्ती की रोशनी में दिखाई पड़ा कि आठ-दस आदमी हैं और वे मुर्दे की तरह कोई चीज बांधे हुए हैं। थोड़ी देर में सब लोग उस बत्ती को घेरकर बैठ गए और सबने मिलकर उस मुर्दे को खोला। आनन्द को यह सोचकर बड़ा दुख हुआ कि ये लोग किसी का कत्ल करके लाए हैं और शायद अब उसे गाड़ने या जलाने वाले हैं। ये लोग चेहरे से भी खराब आदमी मालूम हो रहे थे।

पर जब वह गठरी, जिसे वह मुर्दा समझ रहा था, खोली गई, तो उसमें तरह-तरह के गहने, रुपये-पैसे और कीमती चीजें निकलीं। आनन्द समझ गया कि ये लोग चोर हैं।

वह ध्यान से देखने लगा कि अब वे लोग क्या करते हैं। जो चोर पहले दिन आया था, उसने सब चोरों को पुकारते हुए कहा—भाइयों, हमने बहुत ढूंढ कर इस जंगल का पता लगाया है, जहां पुलिस तो क्या, चिड़िया भी पर नहीं मार सकती। मेरी राय यह है कि हम लोग इसी जगह अपना खजाना इकट्ठा करें और जिसको जितनी जरूरत हो, वह यहीं से ले जाया करे।

एक चोर बोला—हर समय यहां एक आदमी रहा करे।

पर चोरों का सरदार बोला—यहां किसी के रहने की जरूरत नहीं है। यह तो ऐसा बीहड़ जंगल है कि यहां जंगली जानवर भी आते हुए घबराते हैं। मैं तो कई दिन से इस जंगल में घूम रहा हूं। मुझे तो यहां कोई जानवर भी नहीं मिला।

बड़ी रात तक चोर उस दिन की चोरी और अगली चोरी के विषय में बातचीत करते रहे। अन्त में कुछ चीजों को आपस में बांटने के बाद बाकी चीजों को उसी गठरी में छोड़कर बत्ती बुझाकर वे चलते बने।

सवेरे आनन्द ने कछुए को सारा हाल बताया। कछुए ने कहा—यह अच्छा रहा कि तुम दुष्टों की संगत छोड़कर यहां भाग आए और चोर इस जंगल को अपना घर बनाने जा रहे हैं।

दोनों मित्र देर तक इस बात पर विचार करते रहे कि क्या करना चाहिए।

इधर चोर रोज आते और बातचीत कर चले जाते। उन्होंने एक गड्ढा खोदकर उसमें अपना सारा खजाना रख दिया।

जब ऐसा करते हुए कई दिन निकल गए, तब आनन्द ने सोचा कि यदि मैं इसी तरह चुपचाप सारी बातों को देखता रहूं और उन चोरों के काम में किसी तरह बाधा न पहुंचाऊं, तो मैं अपनी नजर में गिर जाऊंगा। मुझे कुछ करना चाहिए। कछुए ने भी यह बात मानी, पर उसने कहा—भाई, मैं तो बस सलाह दे सकता हूं। मैं कुछ कर नहीं सकता।

आनन्द बोला—नहीं, यह बात नहीं, तुम चाहो तो बहुत कुछ कर सकते हो। अभी तुम कुछ न करो। जब जरूरत होगी तो मैं तुमसे पूरी मदद लूंगा।

अगले दिन जब चोर चोरी करके लौटे, तो वे बहुत खुश थे। रोज की तरह वे इत्मीनान से बातचीत और खाने-पीने में लग गए। आनन्द उनके ठीक ऊपर एक डाल पर बैठा हुआ था। उसने पहले ही से उस डाल को ऐसा कर रखा था कि एक धक्के में ही वह भड़भड़ाकर गिर जाए। जब चोर शराब पीकर खूब हल्ला करने लगे तब आनन्द ने वह बड़ी भारी डाल उन पर गिरा दी, जिससे पहले तो बत्ती बुझ गई और चोरों में भगदड़ मच गई। कुछ डाल के गिरने से घायल होकर कराह रहे थे। सरदार को भी शायद चोट आई थी, फिर भी वह चिल्लाकर बोल पड़ा—भाइयो, घबराओ मत, पेड़ की कोई डाल गिर पड़ी है। भागने की जरूरत नहीं है। अभी मैं बत्ती जलाता हूं।

आनन्द ने जब देखा कि उसका सारा प्रयत्न विफल हो जाएगा, तो वह अजीब आवाजें निकालता हुआ उन पर कूद पड़ा। चोर यह समझकर कि कोई भूत आ गया है, डर के मारे वहां से भाग निकले। जो डाल की चोट से मर गए थे, वे वहीं पड़े रहे।

जब सवेरा हुआ तो आनन्द मरे हुए तीनों चोरों को घसीट कर नदी किनारे कछुए के पास ले गया और कछुए से बोला—तुम इन्हें छिपा दो।

कछुए ने वैसा ही किया।

दूसरे दिन दोपहर के समय चोरों का सरदार देखने आया कि क्या मामला है तो उसे वहां खून के धब्बे और कुछ कपड़े मिले। उसने देखा कि माल जहां का तहां वैसे ही रखा हुआ है। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि लाशें कहां गईं, क्योंकि आसपास कोई जानवर भी नहीं दिखाई दिया।

पर चोर आसानी से मानने वाले नहीं थे। वे उस दिन रात को फिर आए, पर अबकी बार वे चौकन्ने थे। आनन्द पहले से तैयार था। उसने यह तय किया था कि कोई ऐसी बात करनी है, जिससे इनमें से कल की तरह दो-चार मारे जाएं। चोरों ने यह नहीं देखा था कि उनके बैठने के स्थान के चारों तरफ सूखे पत्तों का एक घेरा-सा बना हुआ है। आनन्द ने चुपके-चुपके जाकर उन पत्तों में आग लगा दी और जब चोरों को पता लगा कि वे चारों तरफ से आग से घिर गए हैं तो घबरा गए। अवसर का लाभ उठाकर गरजता हुआ आनन्द उन पर टूट पड़ा। उसकी आवाज सुनकर कई आदमी बेहोश होकर आग में गिरकर झुलस गए, बाकी डरकर भाग निकले। अब की बार सरदार भी मारा गया था।

अगले दिन जब आनन्द वहां आया तो उसे यह देखकर बड़ा कष्ट हुआ कि उन चोरों को सजा देने के लिए लगाई आग में जंगल के कई अच्छे पेड़ भी जल गए थे। बड़ी कठिनाई से उसने आग बुझाई।

चोर इतना डर गए थे कि वे लौटकर फिर नहीं आए। वे समझे कि इस जंगल में भूतों का उपद्रव होता है। उनके सात-आठ साथी भी मर चुके थे। खैर, जान बची लाखों पाए।

अब आनन्द और कछुए में इस बात पर विचार होने लगा कि चोरी का जो कुछ माल बचा है, उसका क्या किया जाए।

कछुए ने कहा—यह सब माल हमारे किस काम का?

आनन्द बोला—हमारे तो किसी काम का नहीं है, पर उचित तो यही है कि यह माल उन लोगों को लौटा दिया जाए, जिनके घरों में चोरी हुई। पर, हमें तो यह मालूम नहीं कि किनके घरों से ये चीजें लाई गईं। इसलिए हमारे सामने यही रास्ता है कि जिसे हम गरीब और जरूरतमंद देखे, उसी को ये चीजें पहुंचाएं।

कछुए ने कहा—यह बात बिल्कुल ठीक है। तुम इधर के इलाके में तो खुद ही बांट सकते हो और अगर नदी के पार जाना हो तो मेरी पीठ पर बैठ जाओ, मैं तुम्हें पार उतार दिया करूंगा।

तब से आनन्द दो-एक चीज लेता और चुपके से रात को आदमियों की बस्ती में पहुंचता और जहां देखता कि कोई गरीब आदमी है, उसे वह एक कंगन या एक अंगूठी अथवा रुपए दे आता।

किसी को भी पता नहीं चला कि यह सब कौन कर रहा है। पर लोग यही कहते कि ईश्वर गरीबों की मदद कर रहा है। इस तरह बन्दर चोरों के लिए भूत और गरीबों के लिए ईश्वर बन गया।

सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

मूल्य : 20.00 रुपये